साये और दरख्त

बोधि प्रकाशन

तारिणी सिन्हा
तृतीय सस्करण 2000
(बोधि प्रकाशन से प्रथम सस्करण)
आवरण सजीव कुमार

साये और दरख़्त

तारिणी सिन्हा

बोधि प्रकाशन
जयपुर 302015

साये और दरख्त

मैं एक साधारण पाठक हूँ। टॉम मौरिश की यह पुस्तक मुझे किसी स्नेही ने मेरे पचासवें जन्मदिन पर उपहार स्वरूप दी थी। इतनी कीमती किताब पाकर मैं बहुत ही पुलकित हुआ था। इस पुस्तक को इतिहास की ओढ़नी में ढका एक यात्रा संस्मरण समझूँ या चित्रकारी का एक शानदार एलबम - कहना मुश्किल है। यों बुक स्टालों पर ऐसी किताबें देख उसे लपककर उठाना उलटना-पलटना मेरी आदत में शुमार है परन्तु जब भी मैंने पाउण्ड या डालर में लिखे मूल्यों को रुपये में तौलने की कोशिश की तो गले में कुछ लिजलिजा सा गटकने जैसा एहसास हुआ। बहुत हुआ तो एकाध पॉकेट बुक या मैगजीन खरीद अपनी झेंप मिटाने का प्रयास किया।

मैं टॉम के किताब की बात कर रहा था। आज बावन पार करने के बाद मैं उसके अन्तिम पृष्ठ पर पहुंचा हूँ। शायद अच्छे भोजन की तरह मैं इसे स्वाद ले-लेकर चखना चाहता था फिर यह कोई कहानी या उपन्यास तो था नहीं जिसे लगातार पढ़ जाता। वैसे कितनी ही कहानियाँ इसमें भरी पड़ी हैं एक से बढ़कर एक रस भरी रोमांटिक और लोमहर्षक भी। टॉम लिखता है- मन झकझोरने वाले जो भी किस्से इस पुस्तक में मिलें समझ लें वो आमेर प्रवास के दौरान मैंने अपने गाईड-दोस्त भवर सिंह से सुने थे। जाहिर है टाम इस भवर सिंह से बहुत ही अधिक प्रभावित था। इस पुस्तक का लगभग हर पन्ना इस बात का साक्षी है। होना तो यह चाहिए था कि यह पुस्तक टॉम भवर सिंह को भेंट करता परन्तु उसने ऐसा न कर अपनी इस महान कृति को चन्द रोज की मुलाकाती शेला डैनियल के नाम कर दी। आखिर क्यों ?

पहले पन्ने की भूमिका पढ़ कर सोचा था शायद शेला उसकी प्रेमिका होगी परन्तु ऐसा तो कुछ नहीं यह ख्याल मुझे अक्सर उलझन में डाल जाता। फिर अचानक मन में एक बात कौंधी जो एक छोटे से बिन्दु से पसरकर विशाल प्रश्न चिह्न-सा मुझे चिढ़ाने लगा। टाम को शेला और भवर के बीच से उगती कहानी क्यों नहीं दिखी ? वह तो बड़ा ही चतुर है किस्से गढ़ने में क्या उसने जान बूझकर इन दोनों को दो किनारों की तरह अलग अलग छोड़ दिया कि पाठक भी कुछ अपनी कल्पना की उड़ान भर सके।

ससार की सभी सघषशील महिलाआ को

सादर समर्पित

• उपन्यास

एक

यह कहानी यो ही आरम्भ होती है-

शेला डैनियल को सस्नेह समर्पित।

उस शेला को जिसे सुन्दरी तो नहीं कहा जा सकता परन्तु जिसमे मानो आकर्षण का पुँज विराजमान हो नीली आँखे ओर भूरे बालो के अलावा सब कुछ सीधा-सादा फिर भी जैसे खिचाव का कवच पहने हो।

यू तो हमारी मुलाकात महज चन्द दिनो की ही थी जैसा अक्सर दो सैलानियो मे हो जाया करता है। परन्तु बहुत गहरे वह मेरे जेहन मे यू समाई थी कि आज इतने सालो बाद भी लगता है सामने बैठी है। वही होटल का लॉन है और इस पुस्तक मे रची-बसी सभी घटनाये किस्से कहानियाँ मैं उसे एक बार फिर सुना रहा हूँ। मैं आज भी हैरान हूँ ऐसा क्यो ? कुछ प्रश्न शायद प्रश्न ही रहेगे परन्तु वह जहाँ कहीं भी है मेरे इर्द-गिर्द ही है और रहेगी।

टॉम मौरिश

सोमवार - 24 दिसम्बर 1956
रात्रि 11 00 बजे

दो

ई स 1910 से 1920 के बीच भारत का कोई कोना

जीने की चाह क्या कोई गुनाह है ? अगर एसा हाता तो मौत की जरा-सी सरसराहट जीव को चौकन्ना नहीं करती। प्राण का तो धर्म है अप्राण चेष्टा कर अपने को बचाना और यही तो किया था मानक ने। कल्पना की आँखो पर सवार मन क्या उस त्रासदी का छू भी पायगा जो उस औरत न देखा सही और भोगी। हिकारत भरी वह नजर जो हजारो सालो से नारी जीवन को एक ही कोण से घूरती आ रही है, यह कहती आ रही है - ''हम तुम्ह जीने नहीं देगे और यदि मरन दग ता वह भी अपनी शर्तों पर'' - और यही शर्त ताड भाग निकली थी मानक, रह लेती विधवा बन बिटवा का मुँह देख किसी भी शर्त पर, परन्तु उसे तो रिवाजो की चिता पर स्वाहा होना था। सती हो देवी बनना था। बस वह रात ही उसकी अन्तिम रात थी।

इस जीवन का इतना जल्द पटाक्षेप बाप के घर से मुश्किल से सालह पार कर जब इस दहलीज पर आई थी तो उसने इसे एक नया जावन समझा था। किन्तु हाय री किस्मत! यह जीवन तो सम्पूर्ण छलावा निकला। दस बसन्त भी नहीं दख इस नये जीवन के और अन्तिम सफर की तैयारी।

अपनी कोशिशा मे तो मानक ने काई कमी नहीं रखी थी। जीवन को समझौता नहीं माना था। हाँ - समझौते की सीढियाँ चढकर ही उसन अपना नया कुनबा सभाला था। कुछ ने सशय तो कुछ ने रोष प्रकट किया था उसके ब्याह पर। दबी जबान माँ ने भी विरोध किया था - "कोमल कली को दुहाजू के गले बाँध रहे हो। सुना है लडका चालीस का है तो यह तो उसकी बेटी जेसी हुई।"

हमेशा की तरह मर्द औरत पर हावी हो गया था। पिता ने माँ को घुडकी दी-"तुम चुप रहो लडका चौहान घराने का है। पैसेवाला है। दूर-दूर तक ऐसी धाक है कि पूछो मत - तुम औरता को क्या पता बस मीन-मेख निकाल दिया - अरे अमर सिह जैसा लडका ढूँढे नहीं मिलेगा।"

मानक सब कुछ सुन-जान चुकी थी। उसके मन की उमगें तो कब की जलकर राख हो चुकी थी। अब भय ओर आशकाओ को गले लगाये चलते जाने के सिवा चारा भी क्या था। सुहागरात को तो यह भय हौआ ही बन गया था। किवाड के सीकड लगने की आवाज हथोडे की चोट-सी लगी थी। चमरौंधे जूते की मच-मच की आवाज मानो मानक की धडकनो को एक-एक कर बन्द करती बढती आ रही थी। अगला एक चाँप और उसकी साँस बन्द। दबी आकाक्षाये डर, विवशता उस पर उपवास और ब्याह के रस्मो की हरारत - सबन मिलकर उसे धर दबोचा था और वह सन्न हो लुढक गयी थी।

कितने उमगों से ब्याही गई थी मानक इस चाहान घराने मे। सभी खुश थे पर शीशे पर पडी लकीर जैसे कहीं कुछ खिचा था सब के मन पर - आखिर दूल्हे की दूसरी शादी जो ठहरी। फिर उम्र म दो दूनी चार का फर्क - फिर भी चन्द महीनो मे ही मानक की शकाय आस्था म बदलने लगी थी। कितना प्यार भी ता करता था अमर सिह। छार क जनम के बाद ता जेस अमर सिह जारु का गुलाम ही हा गया था। एस ही किसी कमजार क्षणा म अमर सिह ने दिल खाल कर रख दिया था अपनी दूसरी पत्नी क सामने। साथ ही उसन कसम उठाई थी - यह लूट-पाट और डाकजनी

छाड देगा। सचमुच यह काम अब उसे घिनौना लगने लगा था। कभी-कभी उसे लगता उसके बड़े भाई इस सबके लिए उसे उकसाते थे। क्या वह उनके हाथ की कठपुतली नहीं बन गया था ? उन्हें तो बस एक ही चाव था खेत पर खेत खरीद जाओ। कभी टोका भी तो नहीं, आखिर अमर इतने पैसे लाता कहाँ से है ? क्या उन्हें पता नहीं था व्यापार के झूठे मुखौटे के पीछे क्या कर रहा है अमर ? पर इस छोरी को तो देखो चन्द महीनो में ही सब कुछ भाँप गई।

शुरु-शुरु में अमर को लगा था मानक वही पुराना खेल खेल रही है, भाई से भाई को अलग करने का, चूल्हे चौंके का बटवारा कर स्वयं के अस्तित्व बनाने का। अमर भड़का था उसे कितनी खरी-खोटी सुनाई थी, हाथ भी तो चला बैठ था। मार खाकर मानक न रोई थी न गुस्सा किया था। बस अजीब नजरों से उसे घूरा था जिसमें था न भय, न ग्लानि, कुछ विद्रूप सा भाव था। शायद इन्हीं नजरों ने अमर के मन में शंका का बीज बोया था और उसने अपने आँख, कान खोल लिये थे चौकन्ना हो गया था।

तभी उसे पता चला था उसका दाया हाथ उधो रावत भाई साहब से मिला था। उनका दलाल-जासूस- क्या कहे। कब अमर ने कैसे हाथ साफ किया, कितना उसके हिस्से मे आया सब की खबर देने वाला। उसे घिन-सी आ गई अपने बड़े भाई के ढोंग से जो बड़ा कर्मकाण्डी और दयावान का जामा पहन गाँव का मुखिया ही नहीं, बल्कि एक धर्मात्मा भी कहलाता था। सारा गाँव उसके कथन को देववाणी ही तो समझता था। छी धूर्त कहीं का। अमर ने ठान ली यह धधा वह हर कीमत पर छोड़ देगा परन्तु गहरे दलदल में जा पड़ गया क्या आसानी से उबर पाया है कभी ?

अमर ज्यों-ज्यों छुटकारे की कोशिश करता और धसता चला जाता। उसे लगता उसके चारों ओर एक जाल-सा कसता जा रहा है। शंका अब भय का रूप लेने लगी थी। मानक भी अनजाने ही सशंकित

रहने लगी थी। आखिर हिम्मत कर उस दिन अमर ने लूट के माल के बटवारे के समय अपने दल वालो को साफ-साफ कह दिया – जो हुआ बहुत हुआ, आगे बस- अब उसका रास्ता बदल गया है फिर उसने अपने ऊँट को दुलत्ती लगाई और मुड चला। मुडते-मुडते उसे उधो के चेहरे पर खेलती मुस्कान की एक झलक मिली और उसका मन न जाने क्यो काप उठा।

दूसरे दिन मानक को पता चला वह विधवा हो गई। भाई साहब कितना रोये थे। सारा गाँव उमड पडा था मुखिया के दु ख मे शरीक होने। आह! कितना कर्तव्यनिष्ठ भाई बात तो यही फैली थी – कुछ मुसाफिरो को बचाते-बचाते रेगिस्तानी डाकुओ से मुठभेड मे अमर सिह खेत रहा था। एक से दो दो से दस फिर सौ और हजार मुँहो की गरमी पा यह झूठ का मुलम्मा सच का सोना बन गया था। गाँव के धर्मात्मा पर किसे अविश्वास होता भला आखिर यह वाणी तो उसके मुँह से ही निकली थी। तभी धर्मात्मा का फरमान एक और एलान बन गया – "गाँव मे सती देवी का भव्य मदिर बनेगा, उस स्थली पर जहाँ वीर अमर सिह की चिता पर साध्वी मानक सती होगी ।"

परन्तु क्या धर्मात्मा की धूर्तता उसकी धर्मपत्नी से छुपी थी ? उसे तो सब पता था यह भी कि मानक का बिटवा भी कुछ ही दिनो का मेहमान रह जायेगा। फिर अमर सिह का बडा भाई उसकी सारी जायदाद पर साँप की तरह कुण्डली मार कर बैठ जायेगा। किन्तु वह ऐसा हरगिज नहीं होने देगी। भजन, पूजा जाप और होम के हगामे म पास के गाँव के सती चबूतरे से चरणामृत का घट लिये जेठानी मानक के कमरे गई थी। यही सती का अन्तिम पय होगा। मन मे घुमडती घृणा को कितने सहज ढग से छिपाया था मानक की जेठानी ने। कैसी निर्विकार दिखती थी। परन्तु उसे पता था इस घट के चरणामृत मे कौन-सा विष है जो पूर्णाहुति के पहले अपने शिकार को न मरने देगा न जीने का सही एहसास ही रहने देगा। नीम बेहोशी की-सी हालत म मानक किसी जादूगर के मोहपाश मे

वधी-सी चिता पर जा बैठेगा। दहकते अगारों पर अगर मार भग हुआ भी तो भीड की उन्माद भरी जय-जयकार चीख, चिल्लाहट और ढोल करताल के कलरव म सब कुछ दब जायगा।

नहीं! ऐसा कुछ नहीं होने देगी जेठानी। तभी मत्रोच्चारण क बीच आरती उतारती वह बोली थी "इस आरती क बाद सभी बाहर चले जायगे दरवाजा लगाकर बाहर से सीकड लगा दिया जायगा, तू कोने क बडे घट क जल स स्नान कर सुहाग का जोडा पहन इस चरणामृत का पान कर लेना फिर अगले तीन पहर तक अपने पतिदेव, कुलदेव, ईष्टदेव सबका नाम ले मन ही मन जप करते रहना। तडके सबेरे हम तुम्हें लेने आयगे।" फिर सबको एक-एक कर बाहर कर वह मानक के कानों म फुसफसाई थी - "भाग जा करमजली, मैंने खिडकी की लकडियाँ काट दी हैं आरी भी वहीं धरती पर पडी है उसे यो ही छोड जाना। उत्तर-पूर्व का रुख लेना - अमर का पुराना ऊँट जो तुम्हें खूब पहचानता है धूहे क पार दीवार के किनारे मिलेगा, धूहे के दूसर किनारे पर उसका दूसरा ऊँट होगा वहाँ स दक्षिण रुख कर दौडा देना। बिटवा का मोह मत करना। वैसे भी उसे कल अनाथ होना है। मैं बचन देती हूँ उसे भी मरने नहीं दूगी, पर अभी तू भाग, जितनी दूर हो सके निकलते जाना, रुकना नहीं सोचना नहीं मुडना नहीं जल्दी बस जल्दी निकल भाग, तुम्हें मेरी कसम, बिटवा की कसम" आचल के कोर से आँखे पोछती जेठानी मुडी - फिर खट् किवाड का सीकड लग गया।

मानक भौंचक बन्द किवाड को निहारती रही। उसे लगा वह सुन हुई जा रही है। अचानक जीव ने अपना धर्म दिखाया उसे बचना होगा। कहाँ भान हो पाया था किसी को। होम-जाप, भजन-पूजा मृत पति के साये मे सब कुछ मन प्राण से करती दिखी थी मानक। फिर कैसे सदेह होता और सच पूछा जाये तो पट बन्द होने के पहले स्वय उसे भी तो इसका गुमान नहीं था। आखिर अधविश्वासी आँख गाफिल हो गई और रात के अधेरे मे वह भाग निकली।

दो महीने दो युग से लग रहे थे उसे भी और उसको शरण देने वाले उस स्टेशन मास्टर को भी। कितना बडा खतरा मोल लिया था उसके रक्षक ने। नहीं। मानक उन्हे या हर पल सशकित - भयभीत जीते नहीं देख सकती। टोह लग जाने की आशकाये ईर्द-गिर्द मडराने लगी थी। मानक ने सोचा अधेरे मे कूद ही पडी तो नदी क्या, खाई क्या ? और एक बार फिर वह भाग चली। चुपके से जा बैठी एक मालगाडी क एक डिब्बे म। मालगाडी तो अपनी पटरी पर चल पडी किन्तु मानक के जीवन की गाडी पटरी से उतर नहीं गई थी ? अगर हाँ तो फिर ठहराव कहा और कैसा ?

✣

तीन

कितना कम समय निकाल पायी थी शेला उस जगह के लिये। प्रीमियर इटरनेशनल बैंक के लदन ऑफिस की एक होनहार अफसर होने के नाते उसे इस स्टडी टीम के साथ बाहर भेजा गया था। शेला ने इसे दैवयोग ही समझा था। क्या न समझती। इस टीम म शामिल हाने के लिये उसने काफी हाथ पैर जरूर मार थे पर अपने प्रयासों क फलीभूत होने की आशा नहीं के बराबर ही थी। लॉटरी निकल आने जैसी ही खुशी हुइ थी उसे। पता नहीं कोन-सा आकर्षण था उसके हृदय म भारत के लिये। शायद इसलिए तो नहीं कि उसकी माँ भारत की थी और पिता की कर्मभूमि भी यही थी। पर कहाँ कुछ पता था उसे इस देश के बारे मे। सुना था वह भी वहीं जन्मी थी परन्तु किसी ने कभी विस्तार से बताया क्यो नहीं ? बचपन मे पिता ने कभी चर्चा छेडी भी तो माँ के आते ही बात बदल दी और माँ से उसने जब भी यहाँ के बारे मे पूछा वह इधर-उधर की सतही बाते बता बडी सफाई से बात का रुख मोड देती।

आते समय शेला ने अपनी जिज्ञासा को एक बार फिर दुहराया था और हमेशा की तरह माँ ने फिर बात टाल दी थी। फिर कुछ रोष भरे लहजे म ही उसने माँ से कहा था- "बैंक की तरफ से एक स्टडी टीम म दो हफ्ता के लिय इण्डिया जा रही हू। " उसने बात कुछ या कही थी मानो इस दो हफ्ते म भारत की पूरी जानकारी पा लेगी।

माँ ने शान्त गम्भीर शब्दो म बस इतना कहा था-"अब तुम अपने पेरो पर खडी हो गयी हो और फैसले खुद कर सकती हो।" शेला इस कथन का अर्थ जानती थी। माँ को उसका फैसला भाया नहीं था।

शेला को लगा मा के चेहरे पर कुछ क्रोध-कुछ खीज के भाव खिच आये थे। क्या सचमुच मा खीझीं थी या वह स्वय। जब से जार्ज वाला हादसा गुजरा है वह मा से सीधे आँख कहाँ मिला पाती है। उन्हाने तो उसे न कभी उलाहना दिया न हिकारत भरी नजरो से देखा। अपराध बोध तो उसे आ दबाचता है वरना माँ न तो निश्छल मन से सदा की भाति उस आधी म भी उसकी लपलपात लो का अपनी हथलिया से ढक लिया था। ममता की रौ म उन्हे यह भी भान कहाँ रहा था कि उनक हाथ जल जायेगे। कुछ हद तक जले भी थे। इतना सब समझते हुए भी शेला दोनो के बीच आ गई दरार को कहाँ पाट पाती है, कब उबरेगी वह इस हीन भाव से। उसका मन घबराने लगा। वह चाह कर भी आगे बात करने की इच्छा न जुटा सकी और चुपचाप अपने कमरे म लौट गई।

आज दिल्ली आये उसे चार दिन हो गये। दो-दो दिन कलकत्ता, बम्बई और मद्रास म बिताने के बाद यह चौथा पडाव था। स्टडी टीम ने अपना काम करीब-करीब समेट लिया था बाकी के तीन दिन सदस्यो की सैर के लिये थे। औरा की तरह उसने भी सोचा था अगले दिन आगरा निकल जायेगी, ताज देखेगी। यह तो भला हो उस पेन्टर का जो आने के दूसरे दिन उसे हाटल मे मिला था और बार-बार किसी न किसी बहाने मिलता ही रहा था। यह ता उसी का आग्रह था कि आगरे की जगह वह जयपुर को चल दी थी।

पहले दिन तो शेला टॉम से चिढकर होटल के लाज से बाहर चली आई थी। जिस माहौल म बढी पली और अब भी रह रही है उसके विपरीत अपना यह आचरण बाद म उस कुछ अजीब-सा लगा था। पता नहीं यह महज इत्तफाक था या टॉम की समझा बूझी हरकत। वह खान की मज पर शला की बगल वाली सीट पर आ बैठा था।

' आप शायद मेरा परिचय जानन को उत्सुक हैं ?'' शेला ने ही पहल की थी – ''मेरा नाम शेला डैनियल है।''

''धन्यवाद मेरा नाम टॉम मौरिश है। में एक टूरिस्ट हूँ अमरिकन-आप शायद अंग्रेज हैं – मैं आपके स्टडी टीम क बार म जानता हूँ खास बात यह है कि आप सुन्दर तो हैं ही आपका चेहरा भी मेरा बहुत जाना पहचाना ह।'' टॉम एक ही साँस म बाल गया था। माना डर रहा हा, दुबारा बोलने का मोका ही न मिले।

''क्या कहा ?'' शेला को कुछ अचम्भा हुआ इतना तो वह जानती थी उसक नाक नक्श ठीक-ठाक हैं, शरीर सुडौल है, पर ऐसा कुछ नहीं कि जिधर देखे उधर बिजली गिर जाये। उसने चुप रहना ही बेहतर समझा। टॉम ने फिर काफी कुछ इधर-उधर की बात की अपना परिचय विस्तार से दिया।

दो ही दिनो मे दोना के बीच जैसे वर्षो की दोस्ती सिमट आई। तभी उसने शेला को राजस्थान के राजे-रजवाडे की रूमानी कहानिया सुनाई थी। वहाँ बनाई अपनी पेटिंग्स भी दिखाई थी साथ ही सुनाइ थी – जोधपुर जयपुर आमेर और कोटपूतली के टूटे किला मे सिसकती दफ्नी झकझार देने वाला दास्तानें। पता नहीं इसम कितना सच और कितना ककड-पत्थर था। इतना तो नि सदेह साबित होता था कि टॉम एक सफल चित्रकार ही नहीं कुछ कवियो सा दिलवाला एक भावुक पर ठास कथाकार भी था। यह उसकी भाषा की चासनी और कहने का अन्दाज ही था कि वह घटा एक चित सुनती रही – सिर्फ सुनती रही फिर सोटिंग खत्म होने क पहले जा बात टॉम न उस सारगी वाल क बार म कही थी वह चौंका देने वाली थी।

महीना भर क अपने आमर प्रवास मे टॉम रोज ही उस सारगी वाल स मिलता रहा था। शुरु-शुरु म तो नही पर तासर चौथे दिन से बातचीत का सिलसिला कुछ कुछ बढने लगा था। वेस तो टाम न एक तरह स किले म ही अपना खेमा डाल लिया था। बस रात को पास के

होटल म खाने चला जाता। सुबह से दिन ढले तक किले के भिन्न-भिन्न कोना खाइया म दुबका टॉम अपनी चित्रकारी मे डूबा रहता और साझ ढले जब टूरिस्टा का ताता टूट चुका होता कुछ देर उस सारगी वाले की बीवी की दुकान पर बैठ गप्पे लडाता-हाँ उठने से पहले अच्छी टिप्स देना नहीं भूलता।

धीरे-धीरे तीना बहुत घुल-मिल से गये थे-सारगी वाला भवर सिह उसकी पत्नी शोभा और टॉम। हफ्त भर बाद तो भवर सिह, टॉम के रगमच का सूत्रधार ही बन गया था। अब टॉम अक्सर उस दम्पति के सग उनके झोपडे तक निकल जाया करता था। एक रात गप्पो का सिलसिला कुछ या चला कि भोर का तारा भी डूबने को आ गया। शोभा तो पास को खाट पर उठगी-उठगी ही सो गई थी। ऐसा कुछ अब ज्यादा ही होने लगा था। शोभा को कुछ चिढ सी होने लगी थी परन्तु टिप का मोह भी छोडे कहाँ बनता था।

उस रात भी भवर और टॉम काफी देर तक बाते करते रहे थे। किस्से कहानिया की बाते, राजे-रजवाडो के किस्से, गाँव के छोरे-छोरिया के किस्से, जादू-टोने और अधविश्वासो के किस्से। पता नहीं कहाँ से सीखा था यह सब भवर ने। उसी रात उसने सारगी वाले को बडे गौर से देखा था, तलवार कट मूछे, घने बाल, गोरा चिट्टा रग आँख कुछ भूरी और पारदर्शी-एक बचपने का एहसास दिलाता मासूम-सा।

टॉम की बातो से शेला ने एक अजीब सा खाका खींचा था उस सारगी वाले का गरीब पर मुफलिस नहीं चालाक पर चालू नहीं, कुछ-कुछ भावुक परन्तु अपने नफा नुकसान को कुछ अधिक ही पहचान करने वाला कुछ मुहफट और शायद कुछ स्वार्थी भी। शेला के जेहन म टॉम के उस हीरोकट भवर सिह की कुल मिलाकर कुछ ऐसी ही तस्वीर उभरी थी उसकी बताई कहानिया से कहानिया के पात्रो पर उसकी टिप्पणी और विचारा स-अपनी दिनचर्या पर एक अव्यक्त आक्रोश से। उसकी पत्नी इन सब म गोण - बहुत गौण थी। इस पृष्ठभूमि म टॉम का वह जुमला शेला को बुरी तरह झकझोर गया था-

"जानती हैं मिस डैनियल आपका चेहरा आपके अन्दाज भवर से बहुत मिलत जुलते हैं हा आपका आँख जहाँ नीली गहर झाल सी हैं, उसकी भूरी आम हिन्दुस्तानिया जैसी।"

"आप कहना क्या चाहते हैं ?" शेला के स्वर म रोष था। उसे लगा टॉम उसके व्यक्तित्व के कमजार पक्षा पर छींटा-कशी कर रहा है।

"माफ करना मैंने कतई आप पर कटाक्ष नहीं किया बस या ही रौ म कह गया मुझ सचमुच खद है।" टॉम न शला का हाथ अपन हाथा म ले कुछ ऐसे अन्दाज से यह सब कहा कि शेला का क्रोध झट काफूर हो गया।

आमेर (अम्बेर) का किला किला म बेमिसाल न सही पर अनूठा जरूर है। सैलानियो के लिए शायद बेमिसाल भी। दुलकते हाथियो पर सवार ये देश-विदेश के टूरिस्ट। मन्थर गति से चलता यह काला स्थूलकाय जीता-जागता जहाज उन्हे ले जब किले की ढलान से ऊपर उठता है तो एक विचित्र-सी समा बँध जाता है।

किले की फुनगी पर चढे सैलानियो के लिये यह दृश्य इतना लुभावना होता है कि वे क्षण भर को सब कुछ भूल कल्पना की दुनिया मे कुछ यो खो जाते हैं जैस वे ही राज-महाराज रहं हा, उनकी सवारी उतर रही है और दरबारी कोर्निश कर रहे हैं। जब मोह भग होता है एक हल्की-सी कसक लिये वे आगे बढ चलते हैं। उनमे अधिकाश जो पाव-पेदल ही किले की चढाई चढते हैं कुछ-कुछ छूट जाने कुछ कमी रह जान का टीस लिय लौटत हैं शायद चन्द रुपये और खर्च कर ख्वाबो को थोडा और साकार कर पाने के अवसर को खो देने की मीठी चुभन से उभरी टीस। हाय रे मानव मन!

परन्तु शेला ने तो बाजाप्ता हाथी की सवारी की थी। टूरिस्टो के सग हो-हल्ला किया था। फोटोग्रापस लिये थे। द्वार पर हुए स्वागत समारोह स वह बहुत प्रभावित हुई थी। दोपहर ढले तक उसने किले की परिक्रमा लगभग पूरी कर ली थी। प्यास लग आई थी कुछ ठडा लिया फिर पास

ही के गिफ्ट सेन्टर से कुछ कार्डस, कुछ छोटे-माटे सामान ले सामने घास के मैदान पर एक पेड के छाये मे सुस्ताने लगी। तभी मुख्य दरवाजे के पास बैठी मूगफली बेचने वाली पर उसकी नजर पडी। वैसे कई खोमचे वाले भी वहाँ थे। आँखो-आँखा म ही काफी तोल-मोल कर उसने अनुमान लगाया शायद वही शोभा हो। फिर उसके पैर उधर ही हो लिये। औरो की देखा-देखी कुछ चने खरीदे। अचानक पड पर बैठा एक बन्दर उछलकर आया और उसके हाथो से चने का ठोगा झटककर ले भागा। पल भर को वह सन्न रह गयी। इस आकस्मिक हमले से वह बुरी तरह घबरा उठी थी। उसका मुह पीला पड गया था और एक क्षण को ऐसा लगा, अब गिरी तब गिरी। इधर दर्शको के लिए यह एक मजेदार तमाशा था। चन्द मिनटो मे शेला सम्भल गई। फिर से चने खरीदे और कुछ दाने सामने इधर-उधर उडते कबूतरो की ओर फेके। देखते ही देखते बीसो कबूतर उसके इर्द-गिर्द दाना चुगने लगे। अब उसे धीरे-धीरे मजा आने लगा था।

कुछ देर बाद इस खेल से ऊब वह लौटने लगी। शाम भी तो होने को आ गई थी। तभी उसने देखा चने वाली के बगल मे उसका मर्द आ बैठा था। यही होगा वह सारगी वाला भवर सिह। वह चने वाली के पास वाली सीढी पर जा बैठी और लगी इधर-उधर की बातें करने। बाते क्या थी इशारे और हाथ-पाँव के भाव ही अधिक थे। वैसे टूटी-फूटी हिन्दी शेला को आती थी। माँ-बाप ने कुछ सिखाया जो था। फिर विदेशी टूरिस्टों के साथ मेल बैठाने के लिये यहाँ धधा म लगे लागो ने भी तो टूटी-फूटी अग्रेजी बोलने मे महारथ हासिल कर ली थी। इसी खिचडी से शेला और शोभा दोना मजे मे काम चला रहे थे। बीच-बीच म शेला भवर सिह के तरफ भी मुखातिब हा लेती। बाता का सिलसिला बनाये रखने क लिय उसने टॉम की चर्चा शुरु की फिर क्या था अब तो बाता की पूरी बागडोर भवर सिह ने अपने हाथा म ले ली। काफी देर तक यो ही बात चलती रहीं।

''काफी कुछ मेल है उन दोनो मे'' शेला ने मन ही मन सोचा। ''पगड और भूरे लेस लगा कर भरसक वह उसका डबल बन सकती है सिर्फ उसका कद कुछ छोटा पडेगा।'' यह सब सोच शेला के होठो पर एक हल्की सी मुस्कान खिच गई। इधर भवर सिंह अच्छे इनाम की आशा मे एक रोमाचकारी कहानी सुनाने लगा था। भला भवर को एसे श्रोता भी कहाँ मिलते। वाकई उसके बोलने का अन्दाज, चेहरे के उतार-चढाव का अपना एक अलग ढग था। शायद अवसर मिलने पर वह एक सफल अभिनेता बन सकता था। कहानी खत्म कर भवर सिह ने कुछ ऐसे अन्दाज से शेला की ओर देखा कि उसके हाथ अपने आप पर्स की ओर बढ गये और शेला ने पूरे सौ का नोट उसकी ओर बढा दिया।

भवर सिह की बाँछे खिल गई पर उस सरकते पल मे शेला को ऐसा लगा उसकी आँखो मे एक झिझक भी है। मुसकुराते हुए उसने वह नोट चने वाली को पकडा दिया। शोभा लगी उसकी बलाइया लेने। फिर खुशामद भरे लहजे मे उसने शेला की तारीफ के पुल बाँध दिये कि वह बहुत सुन्दर है बडी दिल वाली है और उसके सिर पर बँधा लाल रेशमी रूमाल तो उसकी खूबसूरती मे चार-चाँद लगा रहा है।

शेला ने इस अदाज मे अपनी तारीफ कभी सुनी ही नहीं थी। अचानक ही उसके मन मे शरारत हिलोरे लेने लगी। फिर जाने किस प्रेरणावश उसने सिर से रुमाल खोल शोभा के माथे पर बाँध दिया। शोभा और भवर सिह दोनो ही बडे जोशो-खरोश से 'थैंक्यू-थैंक्यू' करने लगे। शेला को लगा यह एक महज औपचारिकता नहीं, बल्कि सचमुच प्यार का उद्गार था। पता नहीं क्या उसका मन कुछ भारी हो गया। फिर वह धीरे-धीरे सुस्त कदमो से किले की ढलान उतरने लगी। हठात् उसने पीछे मुडकर देखा दम्पति भी बाहर आ गये थे। उसे मुडते देख अपना हाथ हिलाने लगे थे। वह भी उन दोनो को बाय-बाय कर आगे बढ चली। तब तक माँड भी आ गया था।

❖

चार

अधेरा घिरने लगा था। शोभा ने दुकान बढाई और अपने जुगत का सामान गट्ठर मे डाल सिर पर रख लिया। भवर सिह भी अपनी सारगी और झोला कन्धे पर डाल शोभा के सग किले की ढलान उतरने लगा। साफा बाधे भवर सिह और घाघरा चोली म शोभा टूरिस्ट विभाग के विज्ञापन की विशेष जोडी से दिख रहे थे, पर समा तो बध रहा था शोभा के पैरो म पडी झाझर के खनकने से। कुछ देर दोनो खामोश चलते रहे, फिर शोभा ने ही चुप्पी तोडी- "क्या रे मन उदास हो गया क्या ?"

"हाँ पता नहीं क्यों उस मेम के जाने के बाद मन म टीस-सी लगी।"

"क्या मन टसक गया हाँ थी तो तीखी।" शोभा ने चुहल किया।

"ठट्ठा करती है -साली।"

"अरे गाली-गुस्सा पर क्यो उतर आया ? जा नहीं बोलती कुछ।"

शोभा रूठने का भान कर कुछ क्षण खामोश रही फिर चुपर-चुपर करने लगी।

"पर जो भी कह तुम दोनो की जोडी बडी फिट बैठती - तू भी क्या साहब से कम है देखने मे। मैं तो कहती हूँ तू यह सारगी-वारगी छोड और कोट-पतलून चढा कोई नौकरी कर ले साहबो के भी कान काटेगा।"

"बडी फुदक रही है, घर चल तुझे मजा चखाता हूँ।" भवर सिह की त्योरियो पर बल चढ गये थे।

"अरे अकडता क्यों है जमाने के साथ ही तो चलने को कह रही हूँ।"

"मैं तेरा मतलब खूब समझता हूँ, तुझे मेरा संग नहीं भाता तो जा साहब न सही किसी बाबू के ही साथ जाकर बैठ जा – साली औरत जात होती ही ऐसी है।"

"अरे बाप रे बाप – उतर आया न अपनी औकात पर।" अब शोभा के भी नथुने फडकने लगे थे।

"क्या मैं गलत कहता हूँ ? आज मेरी माँ साली नहीं भागी होती तो मुझे यह सब करना पडता अपना घर-बार छोडना पडता ? उसे तो बस अपनी जान प्यारी थी जरा सोचा भी नहीं कि इस कुसंस्कार का क्या फल भुगतना पडेगा उसकी कोख जने को। सामने आ जाये तो जान निचोड लूँ उसकी। जान इतनी ही प्यारी थी तो चौहान घराने मे क्यो आई थी। अरे पद्मिनी भी तो औरत थी कैसा जौहर किया था। आज सती-देवी कहलाती हमारी मा – कितना मान होता हमारा गाँव म। हम भी चौधरी कहलाते।" यो ही बुदबुदाता रहा भवर सिह, शोभा से अधिक जैसे खुद को दलील दे रहा हो।

शोभा ने बात आगे न बढाना ही उचित समझा। चुपचाप रही, परन्तु मन मे तो उबाल आ ही रहा था। उसे भवर सिह का सब कुछ ठीक लगता था किन्तु ऐसे विचार उसके मन मे काफी कोफ्त करते थे। वह पढी-लिखी नहीं थी। रीति-रिवाजो के प्रति उसकी श्रद्धा थी। फिर भी सती-प्रथा के प्रति भवर का लगाव उसे बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता। शोभा चलती रही – सोचती रही – एक तरफ तो वह इतना समझदार और व्यावहारिक है दूसरी ओर इतना रूढिवादी – आखिर क्यो ? इसकी मा ता वक्त के हिसाब से बडी क्रान्तिकारिणी थी। उसने समाज के गलत रिवाजो के सामने घुटने नहीं टेके थे। भाग निकली थी। जरूर इस निगोड के खून म मा से अधिक बाप का मगज मिला होगा।

परन्तु क्या सचमुच भवर सिह इतना रूढिवादी था जो इन ऊल-जुलूल संस्कारो से उबर नहीं पाया था। ठण्डे दिल से सोचने पर उसे भी

शायद यह अनुचित ही लगता, किन्तु हर व्यक्ति का सस्कार बहुत कुछ हालात के चपेट से भी बनता बिगडता है, बदलता है। बचपन से उसे सिर्फ ताने ही तो मिले थे मा के नाम। वैसे उसका बाप था तो एक तरह से लुटेरा पर चौहान घराने के मुखौटे ने उसे एक इज्जतदार चौधरी बना दिया था। मारा गया था लूट के बँटवारे म पर किस्सा शुमार हुआ, डाकुओ से मुठभेड मे खेत रहा। बात तो वही होवे जो चल निकले। भवर को तो बस इतना ही याद है, उसका बाप एक बडा चौधरी था और मा एक भगोडी जो अपने पति के साथ सती होने के भय से भाग गई। खानदान के मुँह पर कालिख पोत दी। छोड दिया अपने इकलौते बेटे को तानो की बौछार सहने को। कैसी मा थी, जिसे अपने दो साल के अबोध को छोडने मे जरा भी हिचक नहीं हुई। कौन समझाता भवर को-अरे हर हाल मे तुम्हे अभागा ही बनना था। मा तो छूटती ही- चाहे भाग कर चाहे जल कर। शायद उसे दर्द इस बात का अधिक था कि उसका बचपन ताना सुनते-सुनते ही गुजरा था। उसे बडी ललक थी कि उसकी भी घर म समाज मे, कुछ इज्जत होती वह भी पैसे वाला होता। छोटा-मोटा ही सही चौधरी तो होता।

पर हाय री दुनिया। करे कोई, भरे कोई। आखिर छोरे भवर की सहन शक्ति जवाब दे गई और वह भाग निकला। तब वह मुश्किल से दस साल का था। आज भी वह कहाँ भूल पाया है बडी ताई का कोसना हर घडी ताना देना।

''मुँह जले को हमारी छाती पर मूँग दलने के लिय छोड भागी राँड।'' भवर को क्या पता था ताई दिन-रात ताने तो देती पर हर ताने का तीर उसके खुद के दिल पर घाव करते।

बचारी का मन अन्दर ही अन्दर कसकता रहता। बस छुप-छुप कर रोती सोचती-''यह करमजला इतनी लात गाली खाकर भी क्या नहीं भागता। बार-बार मनौती मानती भगवान इस मर चाडाल पति के चगुल स बचा। वचन की लाज रख।

उडने वाला मन और पख कटे हुये। क्या करता भवर सिह ? जब भी अपने जीवन की हीनता उसे सताती, वह अपनी मा को कोसता। शायद अपनी कमजोरिया को ढकने के लिये इससे बेहतर चादर उसके पास थी ही नही।

दोना अपनी झुग्गी मे पहुँच गये थे।

इधर भवर गुम तो उधर शोभा सुम, यानी दाना गुमसुम। भवर सिह कुछ देर अपनी हथेलिया पर सिर टिकाये बैठा रहा फिर कुछ निढाल-सा हो अपनी खटिया पर पसर गया। उसके दिमाग मे जाने क्या-क्या फितूर अपने करतब दिखा रहे थे। शोभा का मन भी भारी था पर उसका ता हाथ पैर हिलाय बिना काम चलना मुश्किल था। पेट को तो भोजन चाहिये ही जुट गई रसाई पकाने म। चूल्हा लहक उठा था। उसके सामने चउके मउके बैठी शोभा - घुटने पर दोना हाथ आर हाथा पर टिकी ठुड्डी चेहरे पर पडती लपटो की रोशनी मे उसका रूप उगते सूरज-सा दहक रहा था।

उबलते भात की हाडी ने उसका ध्यान खींचा। करछुल फिराने क बाद उसके हाथ चोटी लपेटने को सरके तभी उसे अपने सिर पर बधे रूमाल का ख्याल आया। नायलॉन का खूबसूरत रुमाल जो उस मेमसाहब ने बडे प्यार से अपने हाथो उसके सिर पर बाध दिया था और बोल पडी थी-"ब्यूटीफुल! एक्स्ट्रीमली ब्यूटीफुल!"

कभी कुछ इतना तेजी से घटता है कि उसके ओर-छोर का पता भी नहीं चलता ओर हादसा हो जाता है। इस ही हम अपनी तसल्ला के लिए शायद होनी कहते हें। यह होनी ही तो थी कि शोभा के हाथों से वह स्कार्फ चूल्हे पर जा गिरा और उसे बचाने की हडबडी मे पूरी खौलती हाडी उसके बदन पर आ गिरी।

चीख - एक बहुत दर्दनाक चीख हवा म गूँजी। भवर सिह चौंक कर शाभा को ओर लपका। पता नहीं किस ईश्वराय शक्ति न उसे सहायता दी। आनन-फानन उपचार म लग गया परन्तु स्थिति का भयानकता का

[illegible]

[illegible] थी, पर [illegible] [illegible] है, [illegible] अभिमान [illegible] [illegible] है [illegible] [illegible] ?"

[illegible]

[illegible]

पाँच

शेला मिस शेला डेनियल आज बहुत खुश है। क्यो न हो, आखिर उसने अपने जीवन का एक अहम् मकसद हासिल कर लिया है। विश्व बैंक म एक अच्छे पद पर चुन ली गई है। क्या हुआ जो कुछ देर हो गई। यह बात दूसरी है कि उम्र का सुहाना मौसम अब दूसरे ध्रुव का रुख कर चुका है। इस मिट्टी मे तो पचास पार करक भी नई जिन्दगी शुरु हाती है। उसने तो सिर्फ तैंतालिस बसन्तो को पीछे छोडा है। फिर उसने ता अपना रखरखाव भी कुछ ऐसे किया है कि शायद ही कोई उसे तीस से अधिक की आक सके। विधाता की भी विशेष अनुकम्पा थी कि उसे नपे तुले साचे मे ढाला था। उसके पिता भी तो छैले से ही थे और मा का तो कहना ही क्या। बहुत कुछ तो ऐसी ही थी जैसी आज वह स्वय है। हाँ - माँ डाई पसन्द नहीं करती थी ओर चाँदी के तार उसकी माग मे टक गये थे। शायद वह गम्भार दिखना पसन्द करता था। लाग उसक व्यक्तित्व स कितना प्रभावित रहत थ। वह भी ता मन-प्राण से मा की पूजा करती थी। वह तो जार्ज कहाँ से एक पहाड बन आया और ज्वालामुखी-सा फट सिर्फ लावा छोड गया।

फान पर खुशी का पैगाम सबस पहले उसने मा को दिया था और अगली फ्लाइट पकड मा से आ लिपटी थी। वह आनन्दातिरेक से विह्वल थी। मा भी कितनी खुश थी कभी उसकी आखे चूमती कभी माथा। खुशिया क सैलाब न शेला के मन म वर्षो से पल रहे अपराध बोध को

क्षण मे बहा दिया। मा से लिपट-लिपट ही उसकी आँखो मे आँसू आ गये। फिर उसे इतने वेग से रुलाई छूटी कि वह अपने को रोक न सकी और फफक-फफक कर रोने लगी। मा ने भी उसे मन हलका कर लेने दिया। सिर्फ उसका सर सहलाती रही। जब शेला कुछ सँभली तो मा ने दुलार से पूछा-"क्या हुआ रे पगली। इतनी घटा कहाँ रोक रखी थी ?"

हाँ, कहाँ छिपी थी यह व्यथा भरी घटा ? जाने कैसे और क्यो उम्र के इस पडाव पर अचानक इन सूख आये जख्मो मे मवाद फूट पडा। खुशी मे गम का यह कैसा सगम।

छब्बीस के छलिया जार्ज को उसके निकटतम मित्र 'लेडिज-किलर' के नाम से पुकारते थे। हाँ ऐसी ही थी उसकी छवि। बडी हस्ती भी उसके सामने बिछ जाने को विवश हो जाती और शेला भी तन-मन से उसके समक्ष बिछ गई थी। शायद उम्र का तकाजा था। आखिर वह गदह पचीसी से ही तो गुजर रही थी। उसकी निगाहा मे जार्ज जैसा साहसी, माही और समझदार क्या कहीं ढूँढे भी मिलने वाला था ? बस वह तो उसका हीरो था हीरो।

तब शेला उन्नीसवे वर्ष में थी। पहली बार जार्ज से लीडा ने परिचय कराया था। लीडा उससे दो साल सीनियर थी। जार्ज लीडा का कजिन था या नहीं पर यही परिचय दोना ने शेला को दिया था। धीरे-धीरे लीडा दूर होती गई और जार्ज और शेला के बीच का फासला सिमटता गया। दोनो की घनिष्टता गाढी और गाढी होती चली गई। छ महीने तक यह रामास यो ही चारी छिपे परवान चढता रहा था। फिर हठात् एक बार कैसे मा आ गई थी और वह होस्टल से गायब थी। पहले तो शला भय से काँप उठी थी फिर हिम्मत कर मा से जार्ज के प्रति अपनी रुझान का इजहार किया था।

मा न कहा था-"देखग, तू अभी अपनी पढाई पूरी कर।"

परन्तु मा का अन्दाज उसे बडा रूखा लगा था। अब शेला का भरसक प्रयास रहता कि यह बात ढकी-छुपी रहे। फिर भी पता नहीं मा

कैसे उसके मन का आर-पार देख लेती और जितने दिन भी वह उनके पास रहती एक अव्यक्त छपपटाहट का एहसास उसे घेरे रहता। वह दिन गिनती कि कब छुट्टी खत्म हो और वह वापस हास्टल भागे। पर हाय रे भाग्य। इसी बीच जार्ज का फोन आया था। उसने एक ट्रिप का प्रोगाम बनाया था। शेला को हास्टल से एक सप्ताह के लिये विशेष छुट्टी लेनी होगी। हास्टल लौटने से एक दिन पूर्व उसने मा से छुट्टी का अनुमोदन पत्र लिया था। बहाना था लीडा के साथ जाने का। पर पता नहीं क्या मा पूछ बैठी थी "जार्ज भी तो साथ नहीं जा रहा ?"

फिर वह सारी रात सो नहीं पाई थी। मा से बोले इस झूठ का पत्थर उसके सीने पर पहाड जैसा आ बैठा था। यों ऊपर से वह कुछ अधिक ही चहक रही थी। बहुत दुलरा रही थी मा को। मा भी खुश थी। स्टेशन पर उसे सदा की तरह छोडने आयी थी। जब गाडी चलने लगी तो शेला ने चुपके से रात को लिखी एक पर्ची मा को थमा दी। मा ने भी हमेशा की तरह एक लिफाफा उसे पकडा दिया। वह हर बार ऐसा ही करती थी। सब कुछ तो देती ही थी पर गाडी चलने पर कुछ पौंड के नोट रखा लिफाफा अलग से उसे जरुर देती थी। छोटे मे उसे कौतूहल रहता था। देश काल के चलन से बिल्कुल परे। शेला को यह बहुत अच्छा लगता था। परन्तु आज लिफाफा लेते समय उसका हाथ काँप उठा था। सदा की भाँति लिफाफा खोल कर नोट निकालने ही वाली थी कि - 'अरे यह क्या ?' आज तो मा ने नोट नहीं रखे थे। अचम्भा! एक छोटा सा पत्र था जिसमे थे ये चन्द शब्द "तू झूठ बोलकर सारी रात सो नहीं पाई न ? इससे ही यह आकने की कोशिश करना कि जो तू कर रही है क्या वह ठीक है ? हमारा कहना मान विशेष छुट्टी ले ट्रिप पर मत जा। कारण न मैं समझा सकती हूँ न समझाना चाहती हूँ। बस इसे मेरी आज्ञा ही समझ ले।" शेला पानी से निकली मछली की तरह तडप उठी थी। हाय! यह क्या हुआ उसने तो मा को लिखा था- 'ट्रिप मे जार्ज भी जायेगा। पर तुम इत्मिनान रखना मा तुम्हारी बेटी अपना ख़याल रखना जानती है। मैंने सब सच कह दिया है इस विश्वास के साथ कि तुम मुझे रोकोगी नही।"

ओर यही पहला टकराव था माँ बेटी क बीच। जार्ज ने न जाने कैसे उसे अपने मोहपाश म बाँध लिया था और खिची चली गई थी उस ट्रिप पर। कहीं यह अपने व्यक्तित्व की अलग पहचान अपनी परिपक्वता को दर्शाने के प्रयास मे उठाया नई उम्र का विद्रोही कदम तो नहीं था या कि यह दो विभिन्न सस्कारा म पली-बढी दो पीढिया के बीच का सहज टकराव था।

विद्रोह की इस आग को जार्ज बडी चालाकी से हवा दे रहा था। वह बिल्कुल बगुला भगत बन घात लगा रहा था। पर शेला का कोमल मन तो उस बगुल को राजहस समझ उसके सग कहीं भी उड जाने को फडफडा रहा था। लोभ चाहे जितना भी बडा हो शैतान कभी अपने बचाव का रास्ता बन्दकर जाल मे नहीं कूदता। तभी तो जार्ज ने शेला के भाग चलने की सलाह नहीं मानी थी। उसने उसे तब तक इन्तजार करने को कहा था, जब तक वह इक्कीस वर्ष की नहीं हो जाती। शेला को पहले तो यह अच्छा नहीं लगा परन्तु कानूनी रूप से बालिग होने की आवश्यकता का मतलब समझाये जाने पर उसे जार्ज की समझदारी पर फख्र हुआ था।

मा और जार्ज के प्यार के कशमकश से जूझती शेला ने विश्वविद्यालय की पढाई तो किसी तरह पूरी कर ली परन्तु उसे यह भान हो चला था कि वह मा से दूर होती जा रही है। अहम् शायद दोनो पाल रहे थे। अत औपचारिकता ने दोना के रिश्ते की गहराई पर एक गर्द की परत जैसी डाल दी। अन्तत यौवन के दर्प के सामने उम्र ने तटस्थ हो अपने को भुलावे मे ही उलझाये रखना उचित समझा।

एक हद तक पहल शेला ने ही की। कुछ दिन इधर-उधर काम करने के बाद उसे ट्रापिकल बैंक म एक एपरटिस टेलर की जगह मिल गई। अपनी मेहनत और लगन स उसने दो वर्षो की नौकरी मे ही अपनी एक अलग पहचान बना ली। इस बीच सिर्फ पिछले साल बडे दिन पर मा से मिलने गई थी। हमेशा की तरह मा बडे उल्लास से मिली थी। पर शेला कुछ कटी-कटी सी रही। दोनो म से किसी न जार्ज का जिक्र नहीं किया। शेला कहती भी क्या।

जार्ज गाहे-बेगाहे उससे मिलता रहा था। पिछली बार लगभग एक सप्ताह ठहरा था। दोनो रोज शाम को मिलते थे। जार्ज ने शेला को बताया था वह आस्ट्रेलिया मे अपने चाचा के साथ एक बडे डिपार्टमेन्टल स्टार को खडा करने म लगा है। आते ही उसने अपन एडवन्चर की कितनी कहानियाँ सुनाई थीं। शला ता बस सुनती रही-सुनती रही और उसे पता भी नहीं चला कब हफ्ता बीत गया। भला हो जेसी का जिसने शेला के प्यार भरे इन चन्द लम्हो को परवान चढने मे अपनापन और सहयोग दिया था।

जेसी पेटर्सन ट्रॉपिकल बैंक मे पिछले सात वर्षों से काम कर रही थी। शेला को उसक देख-रेख मे ही ट्रेनिग मिली थी। और दोना मे कुछ एसा दोस्ताना हो गया कि दोनो साथ-साथ रहन लग थी। जसी का अपनी मकान मालकिन मिसेज सैम्यूल से बडा लगाव था। चन्द ही दिना मे शेला भी उनके करीब आ गई थी। यह सम्बन्ध और भी मधुर और मजबूत हुआ था मा के आने के बाद। शायद मा आई थी यह इत्मिनान करने कि उसकी बेटी ठीक-ठाक से तो रह रही है। मा का मन ही तो ठहरा। तीन दिनो से वह रुकी हुई थी। मिसेज सैम्यूल ने एक कमरा और खाली कर दिया था और तब स वह कमरा शेला का हो गया था। इसक पहले वह जसी का कमरा शेयर करती थी। इन तीन दिना म मा और मिसज सैम्यूल काफी घुल-मिल गये थ। कहाँ-कहाँ स दानो न कॉमन परिचित ढूढ निकाले थे। अकल पीटर का भी जिक्र छिडा था। मा को जेसी भी बहुत भायी थी। लौटते समय उसके चेहरे पर बडी निश्चिन्तता के भाव थे।

इधर छलिया का छल चलता रहा और शेला उसक दिखाय हवाई किले की चहारदीवारी मे अपने सपनो का महल महफूज करती रही। कितने रगीन सपने थे ये। सब्जबाग दिखाते जार्ज के खत इस रग को और गहराते रहे। साथ ही यदा-कदा वह स्वय आ-आकर इन रगो पर फुहार छोड इन्ह और पुख्ता करता रहा। भोली शला खोती गई। तभी जार्ज का ताजादम खत आया था।

उसका व्यवसाय अब काफी जम गया है। उसने एक घर ले लिया है। इस वार वह पूरे महीने शेला के साथ अपनी गृहस्थी का सामान जुटायेगा फिर दोना शादी कर आस्ट्रेलिया आ बसेगे।

मन की दशा भी कितनी विचित्र है। खुशी का यह सदेश पा शेला जहाँ इतनी पुलकित थी वहीं मन के आसमान पर उदासी का एक टुकडा भी मडराने लगा था। सब कुछ छोडकर एक नई जगह जाना होगा- बिल्कुल अनजानी जगह। पर जार्ज के साथ तो वह स्वय इतना आगे वढ आई थी फिर यह हिचकिचाहट कैसी ? नहीं, अब तो आगे ही बढना होगा। जार्ज के साथ ही उसकी मजिल है और सचमुच उसका छलिया, उसका राजकुमार बडी शालीनता से आया था, पास ही एक बडे होटल म ठहरा था।

इत्तफाक देखो मिसेज सैम्यूल लम्बे भ्रमण पर बाहर निकली थी पूरे घर की जिम्मेदारी जेसी और शेला पर छोड। जेसी को तो उन्हाने धर्म की बेटी ही बनाया हुआ था।

जेसी ने इस बार बडे उत्साह से जार्ज का स्वागत किया था। कोई स्कैन्डल न बने इसलिये जार्ज होटल म ही टिका रहा फिर भी सप्ताहान्त मे शेला और जार्ज साथ-साथ ही रहते थे। जेसी उन्हे जान बूझकर अकेले म छोडकर अपने मा-बाप और नन्हे बेटे से मिलने घर चली जाती। बस यही उसका ससार था। पति से तलाक हो चुका था।

शादी की तारीख मुकर्रर की जानी थी। जेसी चाहती थी छ महीने रुका जाये। मिसेज सैम्यूल आ जाये पर जार्ज ने अपनी मजबूरी जताई थी। उधेडबुन म ही दो हफ्ते निकल गये। अन्तत तय हुआ छठे सप्ताह के अन्त म दोनो परिणय सूत्र मे बध जायेगे। शेला ने सोचा कि मा को कल फोन कर देगे। परन्तु मन उलझ कर रह गया। फिर एक पत्र लिखा। जेसी से एक लम्बी चौडी भूमिका वाली चिट्ठी भी लिखवाई। चिट्ठी कल पोस्ट करेगी किन्तु शेला को कहा पता था होनी कुछ और सोच रही है। काम म कुछ ऐसी उलझी कि पत्र पोस्ट करना भूल गई। यह सचमुच भूल थी या शेला के अर्न्तचेतना म छुपे अपराध का करिश्मा- कहना मुश्किल है।

रात का खाना आज बाहर है। आठ बज गये और जार्ज का कोई

पता नहीं। जसी और शेला दोनो सात बजे स ही तैयार बैठे थ। जार्ज समय का बडा पक्का था और उसने ठीक सात का समय डिनर के लिये निश्चित किया था। तभी नीचे टेलीफोन की घटी बजी। शेला लपकी। जार्ज ही था। उसकी आवाज बहुत शान्त होते हुए भी शेला को लगा उसम एक उद्विग्नता छिपी है। जार्ज बोल रहा था- कि डिनर म वह भाग नहीं ले सकेगा। वह एक आकस्मिक उलझन मे फस गया हे। कुछ जरूरी बन्दोबस्त कर वह दस बजे तक आयेगा। आज की रात स्नैक्स और काफी से काम चलाना होगा आकर सब कुछ सविस्तार बतायगा। इतना कहकर उसने फोन रख दिया।

खाना क्या। बस पट भरने का काम हो रहा था। जार्ज ने जा कहा उससे सब उलट-पुलट हो गया। उसके डिपार्टमेन्टल स्टोर्स मे डकैती की कोशिश की गयी थी। एक सिक्योरिटी गार्ड मारा गया था और गोलाबारी मे उसके चाचा भा गम्भीर रूप से घायल हा गय थ। जार्ज न भर्राये गले से कहा था- "मुझे फौरन जाना होगा। मैंने आज रात के हवाई जहाज से सीट बुक करा ली हे। टाईम्स के सध्या सस्करण म यह खबर छपी है।" इतना कहते हुये उसने अखबार का स्याही से घेरा हुआ हिस्सा शेला और जेसी के आगे कर दिया।

' मेंने सोचा भी नहीं था आस्ट्रेलिया के स्टोर्स के बारे मे यह छोटा-सा समाचार मर बहुत बडे दुर्भाग्य का समाचार है।"

जार्ज की आवाज थरथरा रही थी। जेसी और शला ने उसे बहुत ढाढम बँधाया। दोनो उसे एयरपार्ट तक छोडने गयीं। जार्ज ने पहुचते ही फोन करने का वादा कर विदा ली।

दूसरे दिन सवरे दफ्तर मे जार्ज का फोन आया था- "चाचा की हालत बहुत गम्भीर है। स्टोर्स क एक हिस्से मे आग लग जाने से भारी नुकसान हुआ है।" फिर उसकी आवाज अपने पुराने पुख्ता अन्दाज म बुलन्द हाती गई थी- ' तुम घबराना मत शेला- सब कुछ जल्दी हा ठीक हा जायगा। हा अभी शादी कुछ दिनो के लिये टालना ही होगा। कम स

कम अकल के ठीक होने तक। उनकी हालत मे थोडा सुधार हाते ही में लन्दन पहुँचूगा। जल्द ही अपना कॉन्टेक्ट फोन नम्बर और पता भेजूगा।''

शैला के अवचेतन ने एक झटका दिया। ठीक है फोन नम्बर अभी गडवड हो परन्तु जार्ज कहीं भी रहता हे अपना पता तो दे ही सकता है। लेकिन चेतन पर हावी प्यार के सतरगी ख्वाबो ने इस चेतावनी को ढक लिया था। दो माह तक कोई खबर नहीं। बस एक तार आया था- 'चाचा जी नहीं रहे' फिर अन्तराल। चार माह बीत गये न फोन न खत। शेला को जार्ज से अधिक अपने पर गुस्सा आ रहा था। कैसी बेवकूफ निकली। ठीक-ठाक तो कुछ भी नहीं जानती जार्ज के बारे म। उसका सही ठिकाना क्या है यह भी तो पता नहीं।

शक का छोटा सा विन्दु अब पसरने लगा था। शका का फण धीरे-धीरे फुँफकार मारने लगा था। जेसी भी सशकित होने लगी थी। शेला को बस इतनी तसल्ली थी कि खबर मा तक नहीं पहुँची। अगर उसने चिट्ठी डाल दी होती ? फर्क तो कुछ नहीं पडता। बस मा परेशान होती और उसका दु ख और बढता। शायद ईश्वर सहायक था जो उस रात वह चिट्ठी पोस्ट करना भूल गई थी।

तीन हफ्ते बाद मिसेज सैम्यूल लौट रही थी। जेसी और शला दोनों को बहुत प्यार भरा पत्र भेजा था। दानों रविवार को घर की सफाई और सजावट में लग गये थे। वॉल पेपर आदि नहीं मिल पाने के कारण कुछ काम अगले रविवार के लिये छाडना पडा था। परन्तु उस रविवार को जेसी का बैंक म अचानक जरूरी काम आ पडा था। कुछ महत्वपूर्ण स्टेटमन्ट तैयार करने थे। उस रात जेसी बडे देर से लौटी थी। परेशान दिख रही थी।

शेला ने पूछा-''क्या हुआ ?''

''लगता है हम लोग किसी बडी साजिश का शिकार हो गय हैं। जेसी की आवाज गम्भीर थी पर उसम घबराहट की झलक भी साफ था।

''कैसी साजिश ? 'शला की आवाज में कौतूहल से अधिक भय था।

जसी ने कहा-"घबराने स कुछ नहीं होगा-चलो हाथ मुँह धोकर कुछ खा पी ले फिर दोनो मिलकर सोचगे।"

खाना क्या था बस पेट भरा जा रहा था। जेसी ने कितनी चौंका देने वाली बात कही- "आज चीफ एकाउन्टट ने मिसेज सैम्यूल का फॉरवॉडिग एड्रस (वर्तमान पता) पूछा था। बैंक म सभी मेरे और मिसेज सैम्यूल के सबध को जानते हैं। उन्ह अच्छी तरह मालूम है कि रुपय पैसे सबधी मिसेज सैम्यूल का सभी कारोबार भरसक मैं ही देखती हूँ। एकाउन्टट बता रहा था- बाहर जाने के पहले मिसेज सैम्यूल ने बीस हजार पाउँड के 'लेटर आफ अथॉर्टी टू एनकैश चेक्स' (दूसरी जगहा से रुपया निकालने की एक पुरानी बैंकिग पद्धति) लिया था। उस समय उनक खाते म पच्चीस हजार पाउँड से अधिक की जमा राशि थी। वैसे भी उनके खाते म काफी पैसा ररहता है और मिसेज सैम्यूल हमारे बैंक के प्रमुख ग्राहका म एक हैं। एकाउन्टेट को पता इसलिये चाहिये था कि उनके एकाउन्ट म हो गये ओवरड्राफ्ट (एक तरह का ऋण) की खबर उन्ह तत्काल भेजी जा सके।"

जेसी का माथा ठनका। मिसेज सैम्यूल और आवरड्राफ्ट ? नामुमकिन। बहुत सख्त जरुरत होने पर भी तार नहीं तो फोन से बैंक को स्वय या जेसी को खबर अवश्य करतीं। जेसी का दिमाग एक सतर्क बैंकर की भाँति तरह-तरह की सभावनाआ से सशकित होने लगा। फिर भी बाहर से उसने कुछ भी जाहिर नहीं होने दिया और एकाउन्टेट को यह समझा दिया कि अगले सप्ताह तो मिसेज सैम्यूल लौट रही हैं इस बीच भजा पत्र इधर-उधर घूमता जब तक उनके पास पहुचेगा वो यहीं होगी। एकाउन्टेट को जेसी की बात जच गई थी फिर भी उसने पत्र तैयार रखने को कहा था।

एक घटे बाद अपना काम निबटा जेसी मिसज सेम्यूल के खाते का जाँच करने लगी। ज्यादातार निकाले गये चेक की रकम छाटी-छोटी थी। यही कोई 500 स 1000 पाउड के बीच और सभी चेक लगभग

नम्बरवार थे जैसे 600826, 600827 600828 परन्तु यह क्या ? इनके बीच तीन चेको क नम्बर कुछ बतुके से थे। मसलन 600847, 600848 आर 600849 ओर फिर 600829 600830 आदि। तात्पर्य यह कि चेक बुक के अन्त के कुछ चेक पहल प्रस्तुत किये गये थे और इनको राशि भी काफी भारी-भरकम थी। बीच वाले दोनों चेको मे दो चेक दस-दस हजार पाउँड के थे जबकि तीसरा पद्रह हजार का। उनके बाद प्रस्तुत किये गय दोना चेक पहले की भाँति मात्र पाच पाच सौ पाउँड के थे।

जेसी अभी उधेड-बुन म ही थी कि गार्ड ने दफ्तर बन्द किये जाने की सूचना दी। वह भारी कदमो से घर आ गई।

अब शेला का भी माथा ठनका। देर रात तक दोनो मगजपच्ची करते रहे पर किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाये। अब उनकी शकाय एक भयावह रूप लेने लगी थी। जेसी ने शायद शेला से अधिक अपने को सान्त्वना देते हुए कहा- "भगवान की कृपा से सब ठीक हो जायगा। हो सकता है विशेष परिस्थितिवश मिसेज सैम्यूल ने कुछ भारी रकमा वाले पोस्ट डेटट चेक काट हों और उसके पहले काट गये छोटे-छोटे चको का भुगतान पाने वाला ने अपने चेक देर से प्रस्तुत किये हो। फिर भी बात अटपटी सी है।" घूम फिर कर बात एक अबूझ शका के इर्द-गिर्द चक्कर काटती रही। अन्त मे दानों ने तय किया-भुगतान किये गये चेका विशेषकर भारी रकम वाली चेको की कल गहराई से छानबीन की जायेगी। परन्तु सब कुछ बडी सावधानी से करना होगा।

रात भर दोनो दहशत की नींद साये। दूसरे दिन दोनो ने मिसेज सम्यूल के खात की और भुगतान किये गये चेका की बारी-बारी से सूक्ष्म जाच की। गडबडी की शका अब पुख्ता हाती जा रही थी। मैग्निफाईंग ग्लास ने जेसी की अभ्यस्त आँखा को साफ बता दिया था कि बडी रकमा वाली चेका पर किये गय दस्तखत जाली थे। शला किसी अनजान भय स पसीने-पसीने हा रही थी। जसी का भी वही हाल था परन्तु शला स बडे हाने के भान ने उसे अधिक सम्भाल रखा।

जालसाजी बड़ी चालाकी से की गई थी। नंगी आँखों से फर्क निकालना वह भी काम की भीड़-भाड़ में, नामुमकिन था। जेसी ने पूरी तसल्ली के लिये खुर्दबीन से चेकों की दुबारा जाँच की। फिर ऊपर से धीर गम्भीर बनी चेकों के पुलिंद को वापस कर अपनी सीट पर आ बैठी। उसके दिमाग में तीनों चेकों का खाका कम्प्यूटर ग्राफिक्स की भाँति अंकित हो गया था। इन चेकों का भुगतान दूसरे बैंक ने किसी एम. जॉन के खाते में लिया था। अगले दिन जेसी ने क्लीयरिंग हाउस के स्टाफ के जरिए गुपचुप दूसरे बैंक से और भी सूचनायें प्राप्त की थी। एम. जॉन का पूरा नाम माईकेल जॉन था और उसके खाते का परिचय किसी लीडा ग्रे नाम की महिला ने दिया था जो कुछ वर्षों पूर्व उस बैंक की कर्मचारी थी और बाद में नौकरी छोड़ कर चली गई थी।

मामला साफ था। कहानी पूरी उभर रही थी। माईकेल जॉन कोई और नहीं शेला का प्रेमी जार्ज उर्फ माईक था। जालसाज ने अपने को ज्यादा छिपाने की जहमत मोल नहीं ली थी। यह उसके दुस्साहस ही नहीं दंभी होने का भी प्रतीक था। उसे पता था वह एक व्याघ्र है और जाल में फंसा पछी कोई और जो उसके लिए महज एक शिकार है।

जेसी जितना सोचती उसकी घबराहट बढ़ती जाती। आगे के प्लाट की महज कल्पना ने उसके रोंगटे खड़े कर दिये। मिसेज सैम्यूल ने टूर पर निकलने के दो दिन पूर्व जेसी के मार्फत नया चेक बुक मंगवाया था। यह सिलसिला पुराना था। कभी-कभी यह काम शेला ने भी किया था। उस रोज शेला की छुट्टी थी। जेसी दफ्तर से देर से लौटी थी और मिसेज सैम्यूल घर पर नहीं थी। इधर जेसी को फौरन गाड़ी पकड़नी थी। ट्रेन का समय हो गया था। बैंक में दो दिनों की छुट्टी थी जो वह अपने परिवार के साथ बिताना चाहती थी। जेसी ने अपने साथ लाये चेक भरा सील बन्द लिफाफा शेला को देकर कहा था- ''यह चेक बुक मिसेज सैम्यूल को दे देना और रसीद रख लेना। बैंक खुलने पर जमा कर देंगे। मैं लौटते समय मिसेज सैम्यूल से सीधे स्टेशन पर ही मिल लूँगी।' सोचते-सोचते जेसी का सिर चकराने लगा। किसी तरह अपने को सम्भाला।

दफ्तर का समय खत्म होते ही शेला को जल्दी-जल्दी घर चलने को कहा। रास्ते भर दानो खामोश रहे। घर पहुँचत ही जसी ने झट दरवाजा बन्द कर अपना शक बयान किया।

अब शेला के चौंकन की बारी थी। दूसरे दिन सवेरे मिसेज सैम्यूल किसी काम से बाहर निकली थी। जाते-जाते शेला से पूछा था "जेसी चेक बुक लाई या नहीं ?" इत्मिनान कर वह यह कह निकल गई थी कि चेक बुक लोटकर ले लगी। आज उनका लच बाहर है हो सकता है लौटने म देर हो जाये, शेला शाम को घर पर ही रहे और सफर की छिटपुट तैयारी में उनकी मदद करे। उस रात शेला ने सीलबन्द लिफाफा मिसेज सैम्युल को ज्यो का त्या दे दिया था। उन्होने उसके सामने ही लिफाफा खोल कर चेक बुक निकाला था और हमेशा की तरह बिना गिने अपने बैग म डाल दिया था। फिर पावती की रसीद दस्तखत कर शेला को थमा दी थी। परन्तु आज ये सारे सदर्भ कुछ बदलते नजर आ रहे थे। शका का भूत कुछ और ही इगित कर रहा था।

दोपहर को जार्ज आया था। शेला उसे अपने कमरे में बैठाकर नहाने गई थी। उसे तैयार हो लौटने मे यही कोई आधा घटे लगे थे। लौटकर देखा था जार्ज मेज पर झुका कुछ पढ रहा है। फिर चाय-पान कराकर शेला ने उसे विदा किया था। हमेशा की तरह जार्ज उसके किताबो को इधर-उधर कर गया था। जब शेला उन्हे पुन सजा रही थी उसे कुछ अटपटा लगा था। क्या ? हाँ याद आया। चेक बुक वाला लिफाफा जो उसने टेबुल की दाई ओर बिल्कुल अलग-थलग रखा था एक किताब पर बाई ओर पडा था। कैसे ? क्या ? यादो के टेप कुछ तेजी से रिवाइन्ड हो रह थे। एक बात और याद आ रही थी। किराये की रसीद वह काँटे म फाइल करती थी। अपने किसी पिछल आगमन के दौरान जार्ज ने न जान किस सिलसिले में काँटे में लगी ताजी रसीद को दिखात हुये कहा था "मिसेज सैम्यूल का दस्तखत बडा साफ और सुन्दर है परन्तु तुम बैंक वाले शायद ऐसे दस्तखता को आसानी स नकल किया जाने वाला मानत हो। '

शेला ने हँसते हुए कहा था- "हाँ ये तुम्हार दस्तखत जैसे नहीं जिसम 'जी' की पूँछ देखकर लगता है कोई बत्तख दुम उठाये भाग रही है।" फिर दोनो खूब हँसे थे।

शेला ने अपना शक जेसी को बताया। दोना मिलकर किराये की रसीद की जाँच करने लगे। अचम्भा! एक रसीद पर साफ दिख रहा था दस्तखत काफी मोट अक्षरा म थे। उन पर दुबारा हाथ फिराया गया था अर्थात् किसी ने नमूना उठाया था। अब शक की गुजाईश ही कहाँ रह गई थी। यह जार्ज का ही काम था। शेला को अब सब कुछ साफ नजर आ रहा था। जार्ज का कोई ठीक-ठाक अता पता नहीं देना, चाचा का एक्सीडेंट, सब बकवास! वह पूरा फ्रॉड था। पर हाय री किस्मत! सब कुछ लुटाकर होश मे आये तो क्या किया।

आगे की कल्पना की भयावहता ने शेला से ज्यादा जेसी को सुन्न कर दिया। चेक बुक उसी के द्वारा लाया गया था। लापरवाही और दायित्वहीनता का तो पूरा इल्जाम उस पर आयगा ही और उस अपना नोकरी से भी हाथ धोना पडेगा। वह एकटक शेला को घूरती रही-घूरती रही। शेला जेसी की आँखा मे उमडते सैलाब को न झेल सकी ओर तकिये में मुँह छुपा कर सिसकने लगी। फिर किस शक्ति ने उसे झकझोरा पता नहीं और उसने अपने आँसुओ को यो पोछा माना अचानक सामने आये किसी लक्ष्मण रेखा को मिटा रही हो-

"तुम बिल्कुल चिन्ता मत करो जेसी। मैं सब कुछ लिखकर कल बैंक मे दे दूँगी। यह सब मेरे कारण हुआ है सारा इल्जाम भी मैं अपने सर ले लूँगा।" शला की आवाज कुछ असाधारण सी थी।

"पागल हो गई है" जेसी चौंक कर बाला "तुम एसा नहीं करोगी-हमे जल्दबाजी म तो कतई कोई कदम नहीं उठाना है।" जेसी का दिमाग तेजी से बचाव का रास्ता ढ़ढने लगा था। उसकी आवाज मे फुसफुसाहट थी जैसे अपने आप से ही बात कर रही हा-

"अभी ता एक हफ्ते का समय है। कम स कम मिसज सैम्यूल क

आने तक का इन्तजार किया ही जा सकता है।" अब शेला के घूरने की बारी थी। तभी घडी ने रात के बारह बजाये।

जेसी ऐसे उठी जैसे सब कुछ नार्मल हो और शेला की बाँह पकड उठाते हुए बोली- "उठो झटपट हाथ मुह धो लो। हल्का-फुल्का कुछ खा ल। फिर एक-एक नींद की गोली ले आज की रात इत्मिनान से साये। कल ठण्ड दिमाग स साचगे आगे क्या करना है।"

पर नींद की एक गोली शेला के दिमाग की बौखलाहट को कहाँ रोक पा रही थी। उसके दिमाग की नसे तनने लगी थी। सोच का जाल मकडी के जाले की तरह लचक-लचक कर फैल रहा था। तभी दूर घटे न चार बजाय। एक, दो, तीन कब खिसक पता भी न चला। हार थक उसने एक साथ दो टैबलेट और लिये और चद मिनटो मे बेहोश हो गई।

सबेरे जब शेला की आँख खुली- दिन के ग्यारह बज चुके थे। उसने देखा फलास्क म चाय रखी है और उसके नीचे एक पुर्जा दबा है। जेसी ने लिखा था- "तुम आराम करो मैं दफ्तर मे बता दूगी तुम्हारी तबियत ठीक नहीं-तुम्हारी आज की छुट्टी मजूर हो जायेगी।"

शेला को यह अच्छा नहीं लगा। सारा दिन वह क्या करेगी ? नहाते-धोते कुछ घटे मुश्किल से निकले कि खालीपन और आने वाले खतरे की भयावहता उसे काटने लगी। अचानक उसे कुछ याद आया और वह पुराने अखबार उलटन लगी। जार्ज द्वारा लाया अखबार इत्तफाकन जल्दी ही मिल गया। उसने उस छोटी-सी खबर को ध्यान से कई बार पढा, जिसमे सिडनी के एक डिपार्टमेटल स्टार्स मे आगजनी और धमाके का जिक्र था। थोडी दर बार वह बाहर निकल पडी। जब लौटी शाम ढल चुकी थी। जसी पैन्ट्री मे कुछ पका रही थी। शेला के अदर आत ही जसी ने पूछा- "कहाँ गई थी ?"

"बस यों ही थोडा टहल आई। मन घबरा रहा था। शेला न उत्तर दिया।

का रुदन तो यों ही विवश होता है उस पर अकेलेपन में उस झेलने की विवशता और भी करुण होती है।

परन्तु प्रकृति ने शायद आँसुओं को इसीलिए बनाया है कि जब कोई दुःख असह्य होने लगे तो उसे पिघलने का कोई बहाना मिल जाय। कुछ शान्त होने पर मुँह हाथ अच्छी तरह धो शैला बाहर निकली। बाथरूम के दरवाजे के पास ही जेसी बेचैन सी चक्कर काट रही थी। शैला को निकलते देख उसने राहत की सांस ली, बोली – "चलो कुछ खा-पी लें।"

दोनों का डिनर चुपचाप एक साथ ही खत्म हुआ। टेबुल समेटते हुए जेसी ने कहा- "वक्त आदमी को इससे भी बदतर हालत में पहुँचा देता है। शान्त हो उम्मीद की किरण खोज थक हार कर सो सके तो ठीक है वरना आज भी नींद की गोली ले ले। मैं तो कहूँगी तू एक हफ्ते की छुट्टी ले ले। इस बीच तुम्हारी खोज भी पूरी हो जायगी और ईश्वर ने चाहा तो सब ठीक हो जायगा।"

शैला उठकर बिस्तर पर चली गई। भला बोलती क्या ? किन्तु मन के किसी कोने में आस की एक धीमी लौ कपकपा रही थी। शायद जेसी ठीक ही कह रही हो। शायद उसने कोई रास्ता सोचा हो। बस वह तो यही मनायगी – "भगवान जेसी की मदद कर।" पता नहीं क्या वह यह नहीं सोच पा रही थी – "ईश्वर हमारी मदद कर।" अभी तो जेसी ही उसे भगवान स्वरूप लग रही थी। देर रात तक यों ही प्रार्थना करती मनौतियां मनाती शैला कब नींद के आगोश में चली गई उसे पता भी नहीं चला।

आगे की घटना कुछ ऐसे घटी मानो एक तूफान आया नाव उलटी शैला डूब गई। फिर आँख खुली और वह किनारे पर पड़ी थी। दूर सवेरे का सूरज मुस्करा रहा था।

मिसेज डैनियल और मिसेज सैम्यूल के बीच पिछले दो रातों से देर तक बात चलती रही थी। पहली रात की बात महज औपचारिकता और एक दूसरे के हाल-चाल की पूछताछ में बीती थी। उठते समय मिसेज डैनियल ने बस इतना इशारा किया था कि शैला और जेसी दोनों

वह परसों आ भी रही हैं। मिसेज सैम्यूल भी उसके अगले दिन आ जायगी। उनके आने से पहले मा का आ जाना बहुत ठीक रहेगा। तू घबरा मत। अगर मुझ पर जरा सा भी भरोसा है थोडा सा भी सचमुच का प्यार है तो सब कुछ मुझ पर और मा पर छोड दे। बस केवल प्रभु से प्रार्थना कर वह हमारी मदद करे।"

शेला को कुछ भी सूझ नहीं रहा था। वह तो महज इस कल्पना मे बेचैन थी कि ग्लानि का यह बोझ लिए वह कैसे मा के सम्मुख होगी। नहीं -इससे तो बेहतर है ईश्वर उसे उठा ले। इसी सोच मे वह गुमसुम बैठी रही।

जेसी ने बात का रुख पलटने के लिये पूछा- "अच्छा बता तू कहाँ गई थी ? सारा दिन क्या किया ?"

"बस यो ही टाइम्स के दफ्तर में गई थी।"

"टाईम्स के दफ्तर में।" जेसी की आवाज मे अचम्भा था।

"हाँ परसो फिर जाऊगी एक न्यूज एडीटर ने वादा किया है वह सिडनी वाली खबर का पूरा विवरण पता लगाकर बतायेगा।" वैसे शेला को यकीन था कि उस खबर से जार्ज का कुछ लेना देना नहीं। उसने तो इस इत्तफाक को बहानेबाजी का मोहरा बनाया था। यह नहीं होता तो कोई और कहानी होती। हाय री भोली! कैसे जरा भी शक नहीं हुआ उस बहेलिये पर। कैसे कर गई नादानी! सोचते-सोचते उसे लगा वह पागल हो जायेगी। उठकर बाथरूम की तरफ भागी उसे [illegible] मे उबकाई आ रही थी। उसने पानी के छींटे मुँह पर डाले। सामने आइने में अपना चेहरा उसे बड़ा अजनबी सा लग रहा था। मानो कोई दागी चोर उसे घूर रहा हो।

[illegible] अचानक मा का अक्स सामने उभरने लगा [illegible]। [illegible] और [illegible] भरा [illegible]। [illegible] को एक [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] मा को घूरने लगा।

[illegible] और [illegible]। [illegible]

"मैंने कहा न तू चिंता मत कर। कुछ मिल जुल कर सोचेगे। आज सारा दिन मैंने पूरे मामले पर नये सिर से गौर किया। मुझे आशा की एक हल्की सी किरण दिखाई दे रही है। लगता है कोई न कोई रास्ता जरूर निकलेगा।" कुछ क्षण खामोश रह जेसी पुन बोली – "हाँ बुरा मत मानना मैंने तुम्हारी मा को फोन कर फौरन आने को कहा है।"

'क्या!' शेला चौंकी – फिर गुस्से भरे लहजे मे बोली – "जेसी तुमने ऐसा क्यो किया ?"

"जरा ठण्डे दिमाग से काम ले, यह सिर्फ तेरी या मेरी नौकरी का प्रश्न नहीं। हम दोनो का पूरा भविष्य दाव पर लगा है। जिस पेशे मे हम हैं वह काजल की कोठरी है जहाँ जरा सी असावधानी से लगा दाग छुडाये नहीं छूटता।"

"ओह गॉड!" शेला अपना माथा पकड धम्म से बैठ गई। जेसी उसके पास आ उसका सर अपने कधे से टिका कर बोली – "शेला मैं तुमसे लगभग पन्द्रह साल बडी हूँ। इन सालो ने मुझे जीने की जद्दोजहद मे काफी कुछ सीख दी है। मुझे यकीन है इस मामले को हल करने मे तुम्हारी मम्मी से काफी मदद मिलेगी।"

शेला भौंचक हो जेसी को एकटक देखती रही। उसे जेसी की बाते बडी अटपटी लग रही थी। भला मा इसमे क्या करेगी।

"नहीं जेसी – मैं कल ही बैंक मे अपना बयान देकर कहीं और चली जाऊगी और आगे के फैसले का इन्तजार करूँगी। किन्तु मा को यह काला मुँह नहीं दिखाऊगी। मुझमे इतनी हिम्मत नहीं कि मा की ओर सिर उठाकर देख भी सकूँ।"

जेसी ने बडी गम्भीरता से कहा – "शेला मेरा तुम पर कुछ हक बनता है यह तो मानोगी – मैं उसी का वास्ता देती हूँ मुझे अपने तरीके से इसे हल करने दो। तुम्हारे भाग निकलने से मा को कुछ पता नहीं चलेगा ऐसी तो बात नहीं। देर-सबेर उन्हे तो सब मालूम होना ही है और अब तो

वह परसा आ भी रही हैं। मिसेज सैम्यूल भी उसक अगले दिन आ जायेगी। उनके आने से पहले मा का आ जाना बहुत ठीक रहेगा। तू घबरा मत। अगर मुझ पर जरा सा भी भरासा हे, थाडा सा भी सचमुच का प्यार हे तो सब कुछ मुझ पर ओर मा पर छाड द। बस कवल प्रभु स प्राथना कर वह हमारी मदद करे।''

शेला को कुछ भी सूझ नहीं रहा था। वह तो महज इस कल्पना से बेचैन थी कि ग्लानि का यह बोझ लिए वह कैसे मा के सम्मुख होगी। नहीं -इससे तो बेहतर है ईश्वर उसे उठा ले। इसी सोच मे वह गुमसुम बैठी रही।

जसी ने बात का रुख पलटन के लिय पूछा- ''अच्छा बता तू कहाँ गई थी ? सारा दिन क्या किया ?''

''बस या ही टाईम्स के दफ्तर मे गई थी।''

''टाईम्स के दफ्तर मे।'' जेसी की आवाज मे अचम्भा था।

''हाँ परसो फिर जाऊगी एक न्यूज एडीटर ने वादा किया है वह सिडनी वाली खबर का पूरा विवरण पता लगाकर बतायेगा।'' वैसे शेला को यकीन था कि उस खबर से जार्ज का कुछ लेना देना नहीं। उसने तो इस इत्तफाक को बहानेबाजी का मोहरा बनाया था। यह नहीं होता तो कोई और कहानी होती। हाय री भोली! कैसे जरा भी शक नहीं हुआ उस बहेलिये पर! कैसे कर गई नादानी! सोचते-सोचते उस लगा वह पागल हो जायेगी। उठकर बाथरूम की तरफ भागी उसे जोरो से उबकाई आ रही थी। उसने पानी के छींटे मुँह पर डाले। सामने आइने मे अपना चेहरा उसे बडा अजनबी सा लग रहा था। मानों कोई दागी चोर उसे घूर रहा हो। फिर अचानक मा का अक्स सामने उभरता जान पडा। वही रोष और उद्विग्नता भरा भाव। जार्ज को एक अजीब नफरत ओर बेबसी से घूरती माँ की आँखे और मा को घूरती शेला।

फिर शला का बड वेग स रुलाई छूटी आर आँसू बहते रहे। पछतावे

का रुदन तो यों ही विवश होता है उस पर अकेलेपन में उस झेलन की विवशता और भी करुण होती है।

परन्तु प्रकृति ने शायद आँसुओं को इसीलिए बनाया है कि जब कोई दु ख असह्य होने लगे तो उसे पिघलने का कोई बहाना मिल जाय। कुछ शान्त होने पर मुँह हाथ अच्छी तरह धो शेला बाहर निकली। बाथरूम के दरवाजे के पास ही जेसी बेचैन सी चक्कर काट रही थी। शेला को निकलते देख उसने राहत की सास ली बोली - "चलो कुछ खा-पी लें।"

दोनो का डिनर चुपचाप एक साथ ही खत्म हुआ। टेबुल समेटते हुए जेसी ने कहा- "वक्त आदमी को इससे भी बद्तर हालत में पहुँचा देता है। शान्त हो उम्मीद की किरण खोज थक हार कर सो सके तो ठीक है वरना आज भी नींद की गोली ले ले। मैं तो कहूँगी तू एक हफ्ते की छुट्टी ले ले। इस बीच तुम्हारी खोज भी पूरी हो जायेगी और ईश्वर ने चाहा तो सब ठीक हो जायेगा।"

शेला उठकर बिस्तर पर चली गई। भला बोलती क्या ? किन्तु मन के किसी कोने में आस की एक धीमी लौ कपकपा रही थी। शायद जेसी ठीक ही कह रही हो। शायद उसने कोई रास्ता सोचा हो। बस वह तो यही मनायेगी - "भगवान जेसी की मदद कर।" पता नहीं क्या वह यह नहीं सोच पा रही थी - "ईश्वर हमारी मदद कर।" अभी तो जेसी ही उसे भगवान स्वरूप लग रही थी। देर रात तक यो ही प्रार्थना करती मनौतियां मनाती शेला कब नींद के आगोश में चली गई उसे पता भी नहीं चला।

आगे की घटना कुछ ऐसे घटी मानो एक तूफान आया नाव उल्टी शेला डूब गई। फिर आँख खुली और वह किनारे पर पडी थी। दूर सवेरे का सूरज मुस्करा रहा था।

मिसेज डैनियल और मिसेज सैम्यूल के बीच पिछले दो रातो से देर तक बाते चलती रही थी। पहली रात की बात महज औपचारिकता और एक दूसरे के हाल-चाल की पूछताछ में बीती थी। उठते समय मिसेज डैनियल ने बस इतना इशारा किया था कि शेला और जेसी दोनो

बैंक के किसी जालसाजी का शिकार हो गयी लगती हैं और उन्हे सलाह-मशवरा के लिये बुलाया है।

परन्तु दूसरी रात माहौल काफी सजीदा था और जेसी इसी बीच कॉफी लेकर आ गई थी। मिसेज सैम्यूल घुडकी थी - "जब तक मैं न कहू कोई मेरे कमरे मे नहीं आयेगा।" जेसी ने डबडबाई आखो से मिसेज सेम्यूल की ओर देखा। इन आँखो मे बसी लाचारी और सिसकते फरियाद ने मिसेज सेम्यूल को एक झटका-सा दिया। वे कुछ नरम हो बोली- "तुम अभी जाओ हम दोनो को कुछ देर के लिए अकेला छोड दो" जेसी सहमी-सहमी सी बाहर निकल आई। उधर कमरे म बेचेन शला जेसी का इतनी जल्दी वापस आते देख और बौखला गई। सच तो यह था कि दोनो ही कल शाम से बदहवासी के आलम मे थीं।

लगभग बारह बजे मिसेज डेनियल लौटीं उन्होने आते ही कहा था- "हमने हल्का-फुल्का खाना मिसेज सेम्यूल के साथ ले लिया है। तुम दोनो ने शायद अभी तक कुछ नहीं खाया, कुछ खा-पीकर सो जाओ सवेरे बात होगी। हाँ - चिन्ता की कोई बात नहीं, सब ठीक हो जायगा।"

दूसरे दिन पता चला, यह तै हुआ था कि मिसेज सैम्यूल सभी जाली चेको के भुगतान की पुष्टि कर देगी और ओवरड्राफ्ट का पेसा भी चुकता कर देगी। बेंक को इसकी कोई खबर नहीं होगी परन्तु शेला को नाकरी स त्यागपत्र देना होगा। वह अधिक से अधिक एक माह यहाँ रह सकती है उसके बाद अपना कहीं और इन्तजाम करना होगा।

बाद मे सब कुछ वैसा ही हुआ। मिसेज डैनियल ने शेला को घर वापस चलने को कहा था पर शेला भी तो अपने मा की बेटी थी। उसने मन ही मन मा को प्रणाम किया और कसम खाई - "मा अब मैं कुछ बन कर ही तुम्हारे पास लोटूगी।" उसने पूरी योजना बना ली थी। उसकी बचत छ सात महीने के गुजारे के लिए काफी हागा। फिर काई पार्ट टाईम काम कर लेगी और वह पिल पडी अध्ययन मे रिसर्च म।'आर्थिक दृष्टि से पिछडे देशा की दशा एव उनके सुधार' यही उसका विषय था। चन्द

वर्षो म ही उसके लेख अखबारो म चर्चित होने लगे। उसक लेखा म तथ्यात्मक सच्चाई जा थी।

उसे कॉलेजा और गोष्ठिया मे बोलने का निमत्रण भी मिलने लगा। उसकी एक पहचान बनन लगी। पुन एक बड बैंक म अच्छ ओहदे पर लग गई।

इस बीच मा से बस पत्रा का सिलसिला भर रहा था परन्तु जेसी बीच-बीच मे शेला की मा से मिलने जरूर जाती थी। यदा-कदा जेसी और शेला भी बाहर ही बाहर मिलते रहते थे। पता नहीं क्या शेला की हिम्मत ही नहीं होती थी वह जेसी से मिलने मिसेज सैम्यूल के यहाँ जाय। वक्त या ही गुजरता गया। इस बीच जेसी क माता-पिता दाना ही एक वप क अतराल पर चल बसे थे और जेसी अपने बेटे के साथ मिसेज सम्यूल क यहाँ ही आ बसी थी।

धीरे-धीरे वक्त की मार ने जेसी और शेला के सम्बन्धा की गाठ को पत्रा तक सीमित कर दिया। कभी यादो के उद्‌गार उमडे तो टेलीफोन पर बातचीत कर ली। काफी दिनो बाद जब दोनो मिले थे तो जैसी ने बताया था- "मिसेज सैम्यूल के रुपये का हर्जाना माँ ने कई किश्तो म पूरा किया था। शुरु के किश्तो की भरपाई मा ने अपना मकान गिरवी रख कर किया था। परन्तु उसने जेसी को कसम दे रखी थी शेला को इस बात की जानकारी न हो।"

एक ओर तो बढने और आगे बढने की धुन और खुशी, दूसरी ओर बीते हादसा का भयावह चेहरा। शायद यही कारण कि शेला और जेसी बहुत कम मिलते। फिर भी जब भी मिलते बाते करते पता नहीं वह मुर्दा कब और कैसे कब्र से बाहर निकल आता। शायद डर से भयावह और कोई डर नहीं। शेला कुछ हद तक इससे उबर रही थी। लेकिन जेसी उसे घुन लग रहा था। अचानक पता चला उसके दोना गुर्दे बेकाम हो चुक हैं और जब तक कुछ किया जा सके जेसी सब जजाल से मुक्त हो चल बसी। शेला को लगा उसका आधा हिस्सा मर गया है। काफी दिन लगे

उसे अपने को सम्भालने मे। बडी इच्छा हुई थी मा के पास लौट उसकी गोद म मुँह छुपाकर अपना जी हल्का करे।

परन्तु उसकी अन्तरात्मा ने आवाज दी ' अभी तुम्हारा प्रायश्चित पूरा नहीं हुआ'- ऐसा नहीं कि इस बीच वह माँ से नहीं मिली थी। प्रीमियर इन्टरनेशनल बैंक मे स्टडी टीम के साथ भारत जाने के पहले भी तो वह मा से मिलने गई थी। पुरानी लकीरे तो मिटी नहीं उलटे बात बनने के बिगड गई थी। वह दरार वहीं की वहीं कायम थी। हाँ दूसरी बार जब दोनो जेसी के फ्यूनरल पर मिले थे एक खामोश दर्द लिये बिछुडे थे।

फिर काम और काम। इस देश उस देश की भाग-दौड और शेला अपने मे ही खोती चली गई। उसे अब अपने आप पर एतबार होने लगा था। कुछ-कुछ फख्र भी महसूस होने लगा था। उस पर आज की यह उछाल! विश्व बैंक का यह गरिमामय पद! वह झूम उठी थी। शायद अब उसके व्यक्तित्व मे ठहराव आ रहा था तभी तो सब गुमान भूल सबसे पहले उसने मा को यह खुशखबरी दी थी और अगले ही फ्लाइट से उड मा से जा लिपटी थी।

✤

छ

बाँध तोडकर जब नदी आगे बढती है तो उसे कहाँ गुमान रहता है कि वह किसे रौंदती जा रही है – किसे छोड आगे बढ रही है। शेला का भी यही हाल था। परन्तु आज वह स्पष्ट समझ पा रही है – किन हाथो ने वेग दिया है इस बहाव का। मिसज सैम्यूल ने कितना सटीक कहा था– "तुम अपने भाग्य को सराहो जो ऐसी ग्रैन्डलेडी तुम्हारी माँ है।"

सामने वही ग्रैन्डलेडी बैठी है और शेला की आखे उसे या निहार रही है जैसे कोई मरियम की मूर्ति को अभिभूत हो देख रहा हो। पिछले वर्षो म मा बेटी कितने दूर-दूर रही हैं फिर भी दोना के बीच यह कैसी विचित्र केमीस्ट्री है कि लगता है दोना एक दूसरे की बाँह थाम सफर कर रहे हों।

"अच्छा मा सच-सच बताना तुम्ह जार्ज क्यों नापसन्द था ?" अपने प्याला को माड देते हुए शेला ने पूछा।

"क्या कहू – बस इसे इन्ट्यूशन समझ ले। वेसे मैंने अपने इन्टियूशन को हमेशा ठीक पाया हे – बशर्ते उसका पहला सिग्नल मेरी जहन से न फिसला हो। हालाँकि जब कभी मुझ इस सिग्नल का पकडन म देर हुई कोइ गहरा मुलम्मा कुछ दूसरा मतलब लगान पर मजबूर कर गया। परन्तु जार्ज क मामले म मेरे मन ने बार-बार उससे सतर्क रहने की चेतावनी दी थी।" मा कुछ खोई खोई सी बोली।

''काश मुझे भी एसा इन्ट्यूशन आता पर मेरी ता मति ही मारी गयी थी।'' फिर कुछ रुककर शेला या बोली जैसे खुद से बात कर रही हो- ''मेरे हठ और दुर्बुद्धि न मुझ इतना हठी कर दिया कि वह सब याद कर आज भी आत्मा शर्म से मरी जाती हे। सच मा - वेसे तो कोई इतनी बडी भूल नहीं जो एकदम अक्षम्य हो फिर भी कभी-कभी ऐसा क्या महसूस होता ह कि मेंन सब कुछ खा दिया है।''

''क्या खोया क्या पाया ? इसका आज तक कोई हिसाब कर पाया है, जो तू करने बैठी है। इस पर जितना सोचेगी, यह उतना ही वजनी होगा। इसे दफन कर- खाक डाल। कब्र पर फिर से घास उगा। नया फूल लगा। ये नये पौधे पनप कर मरहम का काम करेंगे।''

''चाहती तो हू कोशिश भी की है पर वे हादसे अचानक भूत की तरह सामने आ जाते हैं और में ठिठक जाती हूँ।''

''अकेले लडने वाले के साथ यही होता है। अकेलापन खुद भूत होने जैसा है। याद रख बेटी एक हद के बाद दलील देने की आदत बुजदिली की निशानी होती है। तर्कों के तराजू पर ठहराव का पलडा कभी भारी नहीं होता। जीने के लिये तो बचे खुचे अरमानो की डार पकडकर गलत सही जो मन कहे फैसला करना जरूरी होता है।''

''कभी तो इन्हीं अरमाना ने - ऐसे ही लालसाआ ने मारा था'' शेला के मन से हूक उठी।

''कभी ओर अभी म फर्क है। मरी हुई लालसा की ललक बहुत कुछ तपे सोने का तेज लिये होता हे।''

''तो क्या सब कुछ खाया पुन मिल जायगा ?''

''फिर खाने-पान की बात ले आई। मेंने जीवन मे जो कुछ पाया उससे अधिक तुझे देने की कोशिश को फिर भी शायद कहीं डडी मार गई। ऐसा हम जान बूझकर नहीं करत। हमारा अह हमार सोचन का तरीका कि में यह सब कर रहा हूँ हमम एसा करवाता है। पर मजे की

बात तो यह है कि न एसा देने वाला जानकर करता है न लने वाला। आदमी वना ही ऐसा है। वह सब कुछ दे ही नहीं सकता। अपने लिये मुट्ठी बॉधे रखना उसकी फितरत ह। हैरत की बात तो यह है कि जब लेने की बारी हाती है ता सब कुछ लपक कर ल भी नहीं पाता। शायद तुमने भी कभी ऐसा महसूस किया हो।''

शेला का लगा मा अचानक कहीं खोती जा रही है। उसकी आँख एक अजीब सी चमक लिये किन्ही यादो के दरीचो को खोल रही है ''तुम्हार पापा तब बिल्कुल चिडचिड हा गय थे। अपनी अपगता से समझौता करने म एकदम असमर्थ। कुण्ठा ने उन्हे शक्की और झक्की बना दिया था। मैं भी एक घुटन-सी महसूस करने लगी थी। तुम्हारे पापा अपना म थे पर मैं यहाँ क लोगा क बीच झली जा रही थी। जी ताड महनत और समर्पित सेवा यही सबल होता हे एक गुलाम का। मैंने भी यही हथियार इस्तमाल किया और बडी मुश्किल से अपने हक के लिये एक छाटी-सी जगह बना पाइ। सामान्य रूप से तो मान्यता का काई प्रश्न था ही नहीं। श्वेत और अश्वेत के बाच की दरार क्या कभी पटी हे जो पटती। दरअसल यह दरार ता होने और न हाने के बीच की दरार है। देश-काल बस इनके रूप-नाम बदलता रहता है।''

शेला को आज पहली बार मा के मन के इस अनजान काने मे झाकने का अवसर मिला था। मिसेज डैनियल अपने ख्यालो मे ही खोई बोलती जा रही थी-

''इन सब क बीच तुम्हारे पापा के कजिन पीटर ही मुझ ऐसे लगे जिसम मुझ कोई फर्क नजर नहीं आया। यह ता उन्हीं का सहारा था जिसन मुझ टूटन से बचा लिया था। पर वे ही तुम्हारे पापा क शक का कारण भी बने। जीवन म उस रात मैंने तुम्हार पापा का पहली बार इतने वाभत्स रूप म दखा था जब उनकी गन्दी गाली-जडा थप्पड मुझ पर पडा था। उस क्षण मैंने साचा था। काश! भगवान उस उठा लता और मुझे मुक्ति मिलती। बाद म कितनी ग्लानि हुई था। जिम मैंने कभा दवता का

तरह पूजा था आज उसी से छुटकारा पाना चाहती थी। कितना अजीब है यह मानव मन, हमेशा अपनी ही करना चाहता है। अगर मन की गति पर बुद्धि का अकुश न रहे तो कितना अनर्थ हो जाये। एक पल को तो मेरा मन भी पीटर की ओर झुकने लगा था। फिर स्वय पर हसी आई थी–यह कैसा वहशीपन छुपा है मेरे अन्दर ?''

''मा – काश। मुझम तुम जैसे सच को स्वीकारने की हिम्मत होती।''

''पगली कौन सी हिम्मत की बात कर रही है ? क्या मनुष्य कभी खालिस सच की गर्मी बर्दाश्त कर सकता है ? नहीं – वह तो सच को भी एक हथियार जैसा इस्तेमाल करता है। जब वह बेबस रहता है तो सामने वाले को कडुआ सच बोलकर अपनी हार को जीत मे बदलने की कोशिश करता है। ऐसे लोगों को कभी कभार मुहफट की सज्ञा भी मिल जाती हे किन्तु यह सब महज मुलम्मा हे, मुलम्मा।''

शेला को लगा वह भी कहीं उलझती जा रही है। मा जैसे नींद से चौंकी– ''अच्छा बहुत हुआ अब चल खा पीकर आराम कर अभी तो ढेर सारी बाते करनी हैं। कल मा बेटी मे नहीं दो सखियो म बात हागी।'' फिर मा ने शेला का माथा चूमा और दोनो उठ पडे।

दूसरे दिन मा ने कुरेद–कुरेद कर पूछा था कि टॉम का क्या हुआ?

''कौन टॉम ?'' शेला की आवाज म सचमुच आश्चर्य था।

''अरे वही तुम्हारा टूरिस्ट जिससे भारत म तुम्हारी दोस्ती हुई थी।''

''अरे माँ तुम्हारा भी जवाब नहीं कहाँ की ईंट कहाँ का रोडा–भानुमति ने कुनबा जोडा।''

फिर अपनी बाता पर गार कर खुद ही मुस्कुराने लगी। मा की आँखा मे एक चमक–सी उठी।

शेला ने खाये–खोये स कहा–' शुरु–शुरु मे उसके दो तीन खत

आये थे। मैंने भी जवाब दिया था। उसके बाद उसने अचानक चुप्पी साध ली। कुछ दिना बाद उसक प्रकाशक न राजस्थान की पृष्ठभूमि पर लिखा उसका यात्रा सस्मरण जो उसने मुझे समर्पित किया था – मेरे पास भेजा था। मैंने उसी प्रकाशक से उसका पता प्राप्त किया था। लगातार उसे कई खत लिख थे और फिर एक खत ता वापस भी लौट आया था और यह कडी वहीं खत्म हो गई।" शेला के स्वरो मे एक विचित्र सी उदासी थी।

मा ने बात का रुख मोड देना ठीक समझा। वह उठ कर आलमारी से कई पुरानी एलबम ले आई ओर शेला के बगल मे बैठ उसके पन्ने पलटने लगी।

कितनी बार देख चुकी है शेला इन तस्वीरो को पर समय के अन्तराल ने उनमे जैस फिर से नई जान डाल दी हो। सभी चेहर तो उसक जाने पहचाने हैं परन्तु आज वे सभी कितने नये से लगते हैं। इन तीन किश्तो वाली एलबम क आखिरी हिस्से म तो सिर्फ उसके अट्ठारहवे जन्मदिन तक के वर्ष दर वर्ष खींची तस्वीरो की तहरीर है, जैसे किसी कृषि वैज्ञानिक द्वारा नये पौधे के पनपने की कहानी दर्ज हो। बाकी दो एलबमा मे वह उसकी मा और उसके पिता बस यही तीन ही तो हैं। शायद अपवाद स्वरूप मा और पिताजी के बीच एक तस्वीर किसी पादरी का है। उसे कई बार यह सब कुछ अटपटा-सा लगा था। परन्तु क्या और क्या ? यह तो अचानक आज पता चला जब मा ने उससे या यो कहें अपने आप से यह प्रश्न पूछा-

"जानती हो इन तस्वीरो म बस हम तीन ही क्यो हैं ? न कोई मित्र न रिश्तेदार न पडोसी ? पीटर तो बाद मे हमारे बीच आया था। तब मैं बहुत डरी-सी रहती थी। सबसे अलग-थलग हमेशा सहमी-सहमी सी।" कुछ देर रुककर मा ने कुछ सफाई पेश करने जैस अन्दाज मे फिर कहना शुरु किया – "उखडे हुए लाग और उखड हुए दरख्त शायद एक जैसे होते हैं- नई मिट्टी नहीं पकड पात और कहीं काइ जड जी भी उठे तो एक अनजान भय उस कुम्हलाये सा रहता है।"

"मा अब तुम सो जाओ" शेला ने टोका। वह मा की आँखो म ठहरा हुआ सा कपन देख पा रही थी।

"सो जाउगी – तू परेशान मत हो। जानती है किसी से बहुत लगाव या बहुत प्यार – हमे दुर्बल बना देता है। मेरा भी चित्त आज दुर्बल हो रहा है। इसलिये तुम्हे सब कुछ बताकर हल्का होना चाहती हूँ। तुम्हारे लिये यह सब जानना इसलिये भी जरूरी है कि कालान्तर के तराजू पर कम से कम तुम मुझे गलत न तौलो।"

शेला कुछ भी बोल नहीं पाई। सिर्फ मा का हाथ अपने हाथो मे पकडे आशकाओ से घिरी उसे एकटक निहारती रही। एलबम का पन्ना पलटते-पलटते मा फिर बोली – "इन तस्वीरो म तुम देख रही हो लगभग हर जगह ये बेजान रेल के डिब्बे हमारे पीछे साये की तरह खडे हैं। इसी ने मेरे जीवन को एक नया मोड दिया था। ऐसे ही किसी डिब्बे से उतर कर एक छोटे से स्टेशन पर में तुम्हारे पिता से मिली थी। तब भारत मे रेल की अलग-अलग कम्पनिया थी। दिल्ली से कलकत्ता तक की लाईन ईस्ट इण्डिया कपनी द्वारा बनाई गई थी। अधिकतर ड्राइवर अग्रेज या एग्लोइडियन थे।" शेला को लगा उसका अपना अस्तित्व धुधला होता जा रहा है। वह मा नहीं मोना, माना डेनियल के परछाई मे विलीन होती जा रही है।

तब मोना कहाँ थी। वह तो मानक थी। अमर की विधवा अपने प्राण बचाने की लुका-छिपी की दौड से थकी हताश उस मालगाडी के डिब्बे से उतर पता नहीं किस प्रेरणावश वह उस अनजान ड्राइवर क पीछे चली जा रही थी। महीनो पनाह देने वाले उस स्टशन मास्टर से बिना कुछ बताये चुपचाप निकल भागत समय मन कितना रोया था। अपनी परवाह न करने वाले रक्षक से ऐसी एहसान फरामोशी ? पर जौ के साथ घुन क्यो पिस ?

मानक न दूर से ही अनुमान कर लिया था वह गोरा चिट्टा ड्राइवर अपनी ड्यूटी पूरी कर क्वार्टर की आर जा रहा ह। इस वक्त उसे अपनी

आजादी देश के इसी दुश्मन मे समाहित लगती थी। हर परिस्थिति का मूल्य उसके परिप्रेक्ष्य म ही आका जा सकता है। फिर भी उसको टोकने की हिम्मत कहाँ जुटा पाई थी मानक। उसके क्वार्टर पर पहुच कर भी दस्तक नहीं दे पाई थी। बहुत हिम्मत जुटा, बरामदे के एक कोने मे दुबककर बैठ गई थी। जरा सा ठहराव पाते ही भयाक्रान्त मन और भूखा पेट लिय क्लान्त शरीर हरहरा कर टूट पडा था और वह तेज बुखार के ताप स नीम बहाश वहीं लुढक गई थी।

जब मानक की आँखे खुली थी वह एक अनजान बिम्तर पर थी। सामने वही ड्राइवर खडा था और उसके सिरहाने सफेद लबादा पहने कोई बुजुर्ग कुर्सी पर बैठा उसका माथा सहला रहा था। बाद मे पता चला था वह वहाँ के चर्च का पादरी था। मानक हडबडा कर उठ बैठी और परिस्थितियो की आकस्मिकता से अकबकाई लपक कर पादरी के पैर पकड सिसकन लगी।

पादरी ने बडे प्यार से पूछा - "टुम कौन है यहाँ किधर से आया ?"

मानक के मुह से बोल ता नहीं फूट पर उसका रुदन और करुण हो उठा।

ड्राइवर तो बस उसे घूरता रहा घूरता रहा। परन्तु पादरी उसे सान्त्वना दत हुय बड प्यार स बाल- "घबराना नहीं - हम बटाओ टुम कौन हा हम टुमारा मडड करगे।"

मानक ने बस इतना कहा - "मैं जान बचाकर भागी हूँ - मुझे बचा लीजिये।" फिर उसका बदन थरथराने लगा। जोरो की कपकपी छूटने लगी। तेज बुखार न उसे फिर धर दबोचा।

समय तो अपनी गति से ही चलता है, यह तो मन है जो कभी पल को पहर और पहर को पल बना दता है। मानक न भी अपने पल घटे और महाने आतक और आशा क बाच झूलते उस कैदा से बिताए थे जिसे

फासी का हुक्म हो चुका हो और उसका अबोध मन उसे बहला रहा हो घबरा मत, तू तो निर्दोष है – तेरा माफीनामा आता ही होगा। पता नहीं मानक को माफी मिली कि नहीं परन्तु भय और आशकाओ को ढकने के लिए उसे समय की चादर जरुर मिली। कितना खूब लिखा है किसी ने–

"भरा करते हैं जख्मे दिल और आँसू भी हैं थम जाते

बनाई जिसने दुनिया ये उसी की मेहरबानी है।"

तभी तो चर्च की छाँव मे मानक का मन रमने लगा था। पढाई सेवा और जॉन के प्यार की महक अब उसके जीवन में एक नया रग भरने लगे थे।

पहली बार वह नाम कितना अजीब कितना बेगाना लगा था। 'जॉन डैनियल' यही तो परिचय दिया था उस ड्राइवर ने। पर देखो तो उस रचयिता को फिर कौन सी नई कहानी रचने लगा ? दो साल बाद ही 'डैनियल' उसका जॉन था और वह जॉन की मोना थी। हाँ जॉन ने उसे मानक से मोना बना दिया था। फिर भी मन के बधन ने मर्यादा के बाध को कभी नहीं लाँघा।

आज ईमानदारी से जब मोना सोचती है तो उसे लगता है इसका अधिकतर श्रेय जॉन को ही जाता है। वह बडा ही धर्मभीरू और सयमी था। तभी तो पादरी के इस सुझाव पर कि दोनो शादी कर ले – मोना ने झट हाँ कर दी थी किन्तु जॉन ने कहा था – "वह तो हिन्दू लडकी है ?" फिर मोना ने ही पहल की थी। वह ईसाई धर्म कबूल कर लगी। जिस धर्म म जिदा जलाया जाये उससे तो बेधर्मी हो जाना कहीं अच्छा है। वैसे सचमुच परखे तो उन दोनो के मन के बधन की उपज तो एक ही धर्म से हुई थी– 'इन्सानियत धर्म से।'

जैसे बुरे दिन नहीं रहते वैसे हा अच्छे समय का चक्का भी घूम जाता है। फिर वह हादसा हुआ था। उस दिन माना जॉन और उनके प्यार की निशानी- दो साल की शेला मधुपुर मे थे। हाय रे विधाता! मोना की

झोली म सिर्फ चद साला की खुशिया डाल मुह फेर ली। उसका सुदर सपना एक बार फिर तोड दिया। कितनी कडी परीक्षा थी मोना के लिये। जॉन ने दुर्घटना म अपनी दाना टाँग खा दी थी।

जॉन पूरे दो वर्ष अस्पताल म रहा था। कितनी बार ऑपरेशन हुये। ज्या-ज्यो गैंगरीन का खतरा बढता जॉन के जिस्म का कटाव भी बढता जाता। आखिर शरीर का घाव ता भर गया परन्तु मन को हीनता का घुन लग गया। जब छ फुट का जवान घटकर साढे तीन फुट का हा जाये ता उसके हृदय का भी पगु हो जाना स्वाभाविक है। यही जॉन के साथ भी हुआ। वह अपनो पर ही नहीं अपने आप पर भी खुद को एक बोझ समझने लगा।

परन्तु मोना चट्टान-सी खडी रही। विधाता ने उसे जीने की ललक ही नहीं परिस्थितियो से जूझन वाला दहकता दिल भी दिया था। नर्स फिर डायटीशीयन और क्या नहीं बनी माना जॉन के लिये। अतत जॉन के दोस्ता दूर के रिश्तेदारा और चर्च के पादरी ने पहल की और माना अपना छोटा सा घासला समट भारत स इग्लैड आ गई। ब्रिटेन क एक छोटे स कस्बे के इस छोटे से कॉटिज ने कुछ ठहराव दिया। यहीं मोना ने एक तरफ शेला को बढते तो दूसरी तरफ जॉन को घटते देखा था। चाहकर भी वह जीने का उत्साह कहाँ जगा पाई थी जॉन मे। परन्तु उसने मोना की सेवा जरूर स्वीकार की। उसे सराहा भी। जब वह साथ होती उस बडा गर्व-सा महसूस हाता किन्तु एकात हात ही हान भाव हौवा बन खडा हो जाता।

माना क्या कर ? तीन प्राणिया का पट उस पर शला की पढाइ-जॉन के पेशन की रकम ता बस गरम तवे पर पडने वाले चद छींटे जैसे थे। मुआवजे और प्राविडेट फड के पैसे तो कॉटेज खरीदने मे ही कब के चुक गये थे। नये दश नये माहाल की जद्दोजहद झेलती मोना अपना कुनबा खींच रही थी। किंतु इस जूझन न उस पर यह सच भी उजागर कर दिया था कि सवाभाव का हर सस्कृति म अभाव है। यदि इस भाव को सर्वोपरि

रख स्वार्थ भी सधे तो इससे उत्तम क्या होगा ? तभी तो उसने चुना था सुबह स शाम तक होटला और घरा की सख्त चाकरी, फिर देर रात तक अपगो और बूढो के अस्पताल मे नर्सिंग। माना बिल्कुल थकी-हारी जब सीधे जॉन के पास लौटती - जॉन खुश-खुश दिखता पर उसकी आँखो मे छलकती पीडा क्या मोना से छिपी रह पाती ?

इन सब के बीच जब शेला छुट्टियो मे घर आती तो जॉन सचमुच बहुत खुश होता। अक्सर शेला को रोकने के लिये मोना से लडता झगडता परन्तु मोना नहीं मानती। फिर जॉन कई-कई दिना तक गुमसुम रहता-एक हठी बालक की तरह। इस लुका-छिपी मे भी मोना ने सिर्फ खुशिया ढूढी ही नहीं उसे सजोया भी। परन्तु जॉन ने साथ नहीं दिया।

तब शेला तेरह की थी। छुट्टियाँ मना उसे हॉस्टल लौटे एक हफ्ते हुये थे कि जीवन की कठोरता से उसका पहला मुकाबला हुआ। कितना तूफान भरा हुआ था उस छोट से तार म 'योर फादर इज नो मोर' (तुम्हारे पिता नहीं रहे)।

फोन की घटी से मा बेटी दोनो चौंकी। फोन शेला का ही था। उसे फौरन मुख्य कार्यालय रिपोर्ट करना होगा। किसी बडे डेलीगेशन के साथ उसे कई देशों के दौरे पर निकलना होगा। मा ने पहली बार उसे भारी मन से विदा किया था। उसने इतना ही कहा था- "मोका निकालकर अब जरा जल्दी-जल्दी आती रहना"।

सात

कहते हैं भगवान के यहाँ देर है अंधेर नहीं। अगर कहीं खाई खुदती है तो कहीं टीला भी बनता है। उसके लेन-देन का हिसाब ही विचित्र है। शायद अब वह शेला की जिदगी की खाई पाट रहा था। परन्तु जीवन जब भी कुछ देता है उससे अधिक मूल्य लेता है और शेला थक गई है इस लेन-देन की दौड से।

उसने फैसला कर लिया है, छोड देगी विश्व बैंक की नौकरी। लदन के ही एक नामी कॉलेज ने उसे प्रोफेसर के नौकरी की पेशकश की है। अब वह मा के साथ ही रहेगी। मा को आराम चाहिये। जब से उसे दिल का दौरा पडा है काफी कमजोर हो गई है। भाग्यवश 'माईल्ड अटैक' था। खबर पाकर शेला के हाथ के तोते उड गये थे। उल्टे पाव लौटी थी मा के पास। मुश्किल से तीन हफ्ते की छुट्टी मिली थी। मा को आई सी यू से जनरल वार्ड में तब्दील कर दिया गया था। डाक्टरो ने दो महीने मुकम्मल आराम की हिदायत दी थी। मा ने उसके सर की कसम खाई थी, वह अस्पताल से निकलकर घर पर पूरा आराम करेगी। मिस रूथ उसके साथ रहेगी। शेला का मन तो तभी किया था इस्तीफा दे दे, पर मा ने बहुत समझाया था। रूथ और मा के कई शुभचिन्तकों ने उसे पूरा इत्मिनान दिया था। फिर भी भारी मन से ही वह काम पर लौटी थी। मा की बीमारी मे उसे एक और अनूठा अनुभव हुआ था। सच्ची लगन से की गई सेवा कभी खाली नहीं जाती।

शला का सदेव यही लगता रहा था कि मा बडी एकाकी है, बिल्कुल कटी-कटी अलग-अलग। लेकिन यह महज उसका भ्रम था। कितने तो चाहने वाले हैं मा के। शुभकामनाओ का अम्बार लग गया था। दो माह बाद जब शेला मा को दुबारा देखने गई थी तो घर का माहौल देख भौंचक रह गई थी कोई ऐटेन्डेन्ट बना है तो कोई किचेन की जिम्मेदारी सम्भाले है। कोई बगीचे की देखभाल कर रहा है तो किसी की ड्यूटी टेलीफोन पर लगी है। मा के आराम म खलल न पडे इसलिये एक अस्थाई साउन्डप्रूफ कबिन तैयार कर टेलीफोन उसक अन्दर रख दिया गया है - मिलने जुलने वाला के लिये समय नियत करने का काम मिस रूथ ने अपने जिम्मे रखा था। वह जानती है मिसेज डैनियल लोगो से मिले जुले बिना और बीमार महसूस करेंगी।

बडा सुन्दर ताल-मेल बिठाया था रूथ ने - मा को अकेलापन भी न खले और थकान भी न हो। बूढो बेसहारो ओर अपगो के अस्पताल मे मा ने जो जी ताड मेहनत ओर निष्ठा भरी सेवा दी थी, आज वही सेवा लेने वाले या उनके शुभचिन्तक अजुरी भर-भर उसका प्रतिदान देने की चेष्टा कर रह थे। यह सब दख शेला का मन भर आया था पर साथ ही उसने यह भी महसूस किया था - कितनी खुदगर्ज है वह। आखिर उसने मा को क्या दिया हे ? गाहे-बगाहे चन्द दिनो की मुलाकात या फिर टेलीफोन पर हाल-चाल पूछने की औपचारिकता। क्या मा के प्रति उसका इतना ही फर्ज बनता है ? जिद्दी धुन और यहाँ की हवा ने तो उसे महज एक मशीन बना दिया है। खुद के इर्द-गिर्द ही घूमते रहना जीवन का मकसद नहीं हा सकता आर उसने यह काम छाड देने का फैसला कर लिया था। तीन महीने का अग्रिम नोटिस भी समय से भेज दिया था।

यह मिशन कल पूरा हा जायेगा आर परसा पूरा होगा उसकी नोटिस का आखिरी दिन। परसो की ही फ्लाइट स लदन की वापसी का टिकट भी बुक है। वेस तो इस भाग-दौड की नौकरी म मा का घर ही उसका स्थाइ पता हा गया था उसने अपना पूरा सामान भी पिछले साल

ही शिफ्ट कर दिया था। उस समय तक मा पूर्ण स्वस्थ हो गई थी परन्तु शेला को यह मलाल रह गया था - वह मा की पूरी तीमारदारी नहीं कर पाई थी। पर सभी उसे उल्टा समझाने बुझाने लगे थे। बडी मुश्किल से तीन हफ्ते की छुट्टी मजूर हुई थी। तभी से विश्व बैंक की नौकरी छोड देने का विचार उसके मन म मडराने लगा था।

आज यह सब सोच शेला को हँसी आ रही थी। उसके त्यागपत्र के जवाब मे बैंक ने फिर एक तुर्रा छोडा था - "वर्तमान मिशन की समाप्ति पर उसे तीन महीने की छुट्टी मजूर की गई है। इस बीच वह पुन विचार कर ले और चाहे तो छुट्टी खत्म हाने पर फिर काम पर वापस आ जाये।"

जब उस हमशा के लिये छुट्टी चाहिये तो तीन माह की मुहलत मिल रही है। यह चाकरी का चक्कर भी अजीब है- प्यासे को पानी की जगह आईसक्रीम दिया जा रहा है।

'एक्सक्यूज मी' एयर हास्टेस ने कॉफी का ट्रे आगे बढाते हुए कहा। शेला की तन्द्रा टूटी। वह अपने सीट पर सभल कर बैठ गई। हाथ की घडी म समय देखा - सवेरे के सात बजे थे और अप्रैल की 26 तारीख थी। एक घटे बाद उसका जहाज स्विटजरलैंड के हवाई अड्डे पर उतरेगा। वहाँ से टीम के कुछ अन्य सदस्य साथ हो लगे और 27 अप्रेल को पूरा डलिगेशन जेनेवा की विशेष गोष्ठी म भाग लेगा। फिर 28 की सुबह उसकी छुट्टी। अचानक उसके मन मे एक खुशी की लहर-सी दाडी। उसने खिडकी से बाहर देखा। मौसम साफ था। हवाई जहाज अपनी पूरी ऊँचाई पर यो उड रहा था मानो स्थिर हो। होटल से निकलते समय भी मौसम बडा खुशगवार था। पता नहीं क्या फिजा म क्रिसमस क खुमार की महक-सी लगी।

हाँ - बडे दिन की छुट्टी पर भी शला मा से मिलने गई थी। वह पूरी चुस्त-दुरुस्त लग रही थी। रूथ ने बताया था उसक आन की खबर मिलत ही मा उसका कमरा सजाने म जुट गई थी। शला को बडा आश्चर्य हुआ था - मा का उसकी बदलती रूचियो की इच्छा-अनिच्छाओ की

इतनी गहरी पकड कैसे थी ? बचपन म उसे बडे-बडे फूल वाल शोख रगा के वॉल-पेपर अच्छे लगते थे पर अब उसकी पसन्द हल्के-फुल्के रगा की छींटो और बुदको मे बदल गई थी। कमरे की बाकी सजावट भी उसके तबीयत के मुताबिक थी। बडा अच्छा लगा और उसने मन ही मन फैसला कर लिया था अब सदा के लिये मा के साथ रहेगी।

परिचारिकाओ की आम सेवा समाप्त हो चुकी थी। अधिकतर यात्री पेपर या मैगजीन पढने मे तल्लीन थे। कुछ झपकिया भी ले रहे थे। शेला को बस बोरियत हो रही थी। अखबार तो उसने कब का देख लिया था। समय काटने के लिए उसने सामने वाली सीट म पडी साप्ताहिकी निकाल ली और उसके पन्ने पलटने लगी। 'क्राइम रिपोर्टर' - मार-धाड और अपराधो के चटपटे समाचारो से भरपूर कोई स्थानीय पत्रिका थी। सम्भवत फोटो पुरानी थी ओर ब्लो अप के फैलाव से शक्ल कुछ धुधली दिखती थी।

शेला को हठात् लगा युवक का चेहरा काफी जाना पहचाना है। अभी उसका दिमाग यादो की फाइल ढूँढने म लगा था कि फोटो के नीचे छपे सक्षिप्त समाचार को पढकर वह बुरी तरह चौंक उठी। उसके मुँह से एक दबी-सी चीख निकलते-निकलते रह गई "माईकेल उर्फ माइक उर्फ जार्ज या जोजेफ ओर क्या-क्या और उसकी गर्ल फ्रेन्ड ग्रेसी उर्फ लिन्डा ग्रे एक बैंक म डाका डालते समय मारे गये। उनके दो अन्य साथी भी बुरी तरह घायल हैं जिनके बचने की कोई आशा नहीं।"

इस खबर से शेला के मन को चहकना चाहिये था। परन्तु ऐसा तो कुछ नहीं हुआ। उल्टे अन्दर ही अन्दर एक गहरे दर्द की परत सी फैलने लगी। अरे! वह तो पत्थर दिल निकली पर बेचारी जेसी इसे कहाँ झेल पाई। जेसी को याद कर शेला की आँखे छलछला उठी। उसका मन दु ख से कातर होन लगा। क्या इस दु ख म जार्ज के बेतुक अन्त की पीडा भी मिली थी या सिर्फ अपनी भूल के बेमानी अन्त की ? नहीं - उसे तो परिस्थितियो की विवशता से उपजी पूरे प्रकरण की व्यर्थता कचोट रही

थी। प्रायश्चित के नाम पर अपनी एक छोटी सी भूल के लिये उसने अपने सम्पूर्ण जीवन के रस को खुद सोख शुष्क और वीरान बना लिया था। जीने के लिये तो उमगो की चुनरी चाहिये थी, कामयाबी का कफन नहीं। इतनी कीमत लेकर तो समय ने पुराने जख्मो को कब का भर दिया था पर अब जो घाव भरना था वह तो ऑपरेशन के बाद वाला जख्म था। धीरे-धीरे उसका चित्त सभलने लगा। उसने एक गहरी सास ली - यह नहीं तो ऐसा ही कोई और अन्जाम होता। यह तो ईश्वर की कृपा है कि उस पटाक्षेप का पता चल गया वरना इस हादसे का हौआ यदा-कदा उसे सताता ही रहता।

प्लेन के लैंडिंग की घोषणा सुन शैला का ध्यान बटा और वह सजग हो उठी। जहाज के उतरते-उतरते वह भरसक सामान्य हो चुकी थी। निराशा के बादल उम्मीदो के तूफान मे उड चले थे। अब उसका मन इस मिशन से जल्दी-जल्दी छुट्टी पा मा से मिलने के लिये उतावला हो रहा था। आने वाली कल की मीठी महक मे डूबती उतरती वह बैगेज एरिया से अपना सामान ले लॉज की ओर बढी तभी अपने नाम की घोषणा सुन उसके पाव पूछताछ काउन्टर की ओर मुड चले।

काउटर के पास टीम का एक पूर्व परिचित सदस्य खडा था। उसने बडे फीके शब्दो मे 'हैलो' कहा और औपचारिकता निभाने के लिये अपना हाथ आगे बढाया "ओह उसके हाथ इतने ठण्डे और बेजान से क्यो है ?" शैला का हृदय किसी अन्जान आशका से काप उठा।

"मुझे आपको यह दु सवाद देते बडा कष्ट हो रहा है।" सदस्य का गला भर्राया हुआ था। उसने आहिस्ता अपने कोट की जेब से एक लिफाफा निकाल शैला की ओर बढा दिया। शैला ने काँपते हाथो से लिफाफा खोला। हवाई जहाज के एक टिकट के साथ छोटा-सा पुर्जा लगा था।

"हमे बडे खेद के साथ सूचित करना पड रहा है कि आज तडके आपकी मा का देहान्त हो गया। ' बैंक ने उसे मिशन से बरी कर दिया था। साथ ही लन्दन के लिये अगली उडान से उसकी सीट भी बुक कर दी थी।

ᐩ

आठ

मृत्यु महान है, एकरूपा है। इसीलिए आदरणीय है। तुच्छ से तुच्छ प्राणी हो या महान से महानतम हस्ती सबको क्षण म अपने मे समेट लेती है। यह तो दुनियावी चोचले हैं जो हमने शोक मनाने की भी भिन्न-भिन्न मर्यादाये निर्धारित कर रखी हैं। जो सचमुच शोकाकुल है वह तो दग्ध हृदय लिये महज एक कठपुतली जैसा रिवाजो की डोर पर नाचते औपचारिकता निभाने को बाध्य है। शेला की यह मजबूरी है। उसकी मा हमारी मानक यानी मिसेज मोना डैनियल की आज अत्येष्टि है। सब कुछ समुचित सम्मान और मर्यादा से हो रहा है जैसे किसी साधारण कर्मनिष्ठ के लिये होना चाहिए। आज शेला का रहा-सहा भ्रम भी जाता रहा वह साफ देख रही थी-मिसेज मोना के चाहने वाला की सख्या कम नहीं। हाँ, बुजुर्गों की सख्या अधिक थी, कुछ के तो आसू थम ही नहीं रहे थे। ये दिखावे के आसू नहीं दर्द से पिघलते प्यार के प्रतीक थे और यही भीतर ही भीतर शेला को बल दे रहे थे।

मई की 2 तारीख है मा को गुजरे एक सप्ताह बीत गया है। शेला अपने कमरे मे निपट अकेली है। हर तरफ हू-हू करता सनाटा है। पता नहीं क्यो शेला का मन अब भी मानने को तैयार नहीं कि मा नहीं रही। उसे लगता है मा यहीं कहीं है। वह लुका छिपी खेल रही हैं ओर जानते हुये भी कि शला कहाँ छुपी है सामने नहीं आ रही उसे तग कर रही ह।

"नहीं मा ऐसा मत करो" - शेला का रोम-राम क्रन्दन कर उठा।

वह बिन पानी की मछली सी छटपटाती मा के कमरे की ओर दौड चली। वहाँ भी घोर सन्नाटा था। दीवार पर टगी मा की तस्वीर के नीचे एक मोमबत्ती जल रही थी और सामने रूथ खडी-खडी प्रार्थना कर रही थी। शला भी धीरे से चलकर रूथ क बगल मे जा खडी हुई। उसने देखा रूथ की आँखो के कोर पर आँसू की पतली लकीर सी खिची थी। उसकी आँख भी भर आई।

आहट पा रूथ ने आँखे खोली फिर अपने सीने पर क्रॉस करते हुए शेला के गले से लिपट गई। कुछ क्षण दोनो एक-दूसरे के कधे पर सिर टिकाय अपना जी हल्का करते रहे। पहले रूथ ही सभली फिर शेला का हाथ पकड उसे किचेन मे ले गई। उसने दो कप कॉफी तैयार की। दोनो पास की कुर्सी पर बैठ चुपचाप कॉफी पीते रहे। एक अव्यक्त खामोशी के बीच दाना ही घिरी थी। परन्तु काइ इसे ताड नहीं पा रहा था। रूथ कुछ ज्यादा ही परेशान थी पर उसे सूझ नहीं रहा था बातों का सिलसिला आखिर कैसे शुरु किया जाये। वह महसूस कर रही थी शेला को बातो मे लगाना जरूरी है। मा की अत्यष्टि के बाद से वह बिल्कुल गुमसुम है। बस हूँ-हाँ म बात खत्म। बडी मुश्किल से उसे एक सूत्र मिला।

"मुझे लगता है मिसेज डैनियल कुछ प्लान कर रही थी पर तुम्हारी राय जाने बिना कुछ पक्का नहीं कर पा रही थी। शायद तुमसे जिक्र " रूथ ने जानबूझ कर वाक्य को अधर मे ही छोड दिया।

"कैसा प्लान ? मा न मुझस ता कभी कुछ जिक्र नहीं किया" - शेला का कौतूहल जाग उठा था। "मुझसे भी तुम्हारी मा ने जिक्र तो नहीं किया परन्तु पिछले कई महीना से मुझे ऐसा लग रहा था वे किसी उधेड-बुन में लगी हैं।" रूथ ने बातो को उलझाये ही रखा।

कुछ देर बातो का गोल-मोल सिलसिला या ही चलता रहा। शेला को कुछ खीझ भी होने लगी थी। रूथ की बातो का कोई सिर पैर उसकी समझ म नहीं आ रहा था। पूरे प्रसग म उसे एक बात अटपटी लगी थी। रूथ ने कहा था - पिछले कुछ महीनो से मा लगातार चर्च जाया करती

थी। कभी-कभी फादर भी घर पर आते थे। आश्चर्य! मा और चर्च! हाँ पिताजी जब थे वह हर रविवार प्रात उन्हे व्हील चेयर मे बैठा चर्च जरूर ले जाती थी। परन्तु उनके गुजरने के बाद सिवाय क्रिसमस के उसने मा को कभी गिरजाघर जाते नहीं देखा था। यह भी नहीं कि वे धार्मिक विचारो वाली नहीं थी। शेला जानती थी मा को ईश्वर के अस्तित्व म असीम आस्था थी परन्तु उन्ह धर्म के मामले मे कोई दिखावा पसन्द नहीं था। उनकी प्रार्थना मौन ही हुआ करती थी। इस मामले मे मा-बेटी दोनो एक जैसे थे।

"हो सकता है उम्र के ढलते पडाव पर उनके मन मे कुछ बदलाव आया हो।" शेला के मन ने यह तर्क दिया पर वही मन इस तर्क को चुपचाप मान लेने को भी तैयार नहीं हो रहा था। वह रूथ को कुरेद-कुरेद कर बातो की तह तक जाने की कोशिश करने लगी। हार थक कर बहस इस बात पर खत्म हुई कि कल दोना फादर मेथ्यूज से मिलकर मा की अन्तिम इच्छा का पता लगायेगे। यद्यपि रूथ को पता था फादर मैथ्यूज कोई पन्द्रह दिन पहले ही न्यूजीलेंड चले गये हैं। वे मिसेज मोना की अत्येष्टि में भी उपस्थित नहीं थे। परन्तु उसने शेला से इसका कोई जिक्र नहीं किया।

दूसरे दिन रूथ काम का बहाना कर कट गई और शेला को अकेले ही चर्च जाना पडा। वहा अब नये फादर पीटर थे। उन्हें किसी बात की जानकारी नहीं थी परन्तु उन्होने वादा किया कि वे मदर सुपीरियर से सम्पर्क कर पता करेगे। जरूरत पडी तो फादर मैथ्यूज से भी सीधे सम्पर्क करगे।

दो दिनो बाद पता चला कि मिसेज मोना अपना मकान किसी वृद्धाश्रम को बेचने की बातचीत कर रही थीं। यह भी पता चला कि सम्बन्धित ट्रस्टी बाजार भाव का एक तिहाई देने का तैयार था और मिसेज डैनियल आधा दाम चाह रही थीं। बाद म बात लगभग तय हो चुकी थी। छूट की रकम मिसेज मोना के चन्दे के रूप में मानी जायेगी और वे इस

आश्रम की आजीवन ट्रस्टी रहेगी परन्तु उन्होने कागजात पर दस्तखत इसलिये नहीं किये थे कि वे अपनी बेटी से एक बार पूछ लेना जरूरी समझती थीं। उन्होने कहा था "एक दो माह बाद शेला आने वाली है, उसने अपने दफ्तर के आस-पास ही कोई फ्लैट देख रखा है। वह जल्दी से फ्लेट ले सके तो वे वहीं चली जायेगी। वैसे भी आधे से अधिक समय तो वह भाग दौड मे ही लगी रहती है। कुछ नहीं तो फ्लैट की देख भाल के लिये ही उसको कोई चाहिये। मा अपनी बेटी की पार्टनर बन उसे शेयर करेगी।"

ट्रस्ट के अध्यक्ष उनकी बात सुनकर मुस्कराये थे। कुछ शका भी व्यक्त की थी - "क्या नई पीढी को यह बात पसन्द होगी ?" मिसेज मोना ने बस इतना ही कहा था - "पता नहीं परन्तु मुझे लगता है कि शला को यह प्रस्ताव बुरा नहीं लगगा।"

शेला मन ही मन अपन को कोसन लगी। काश! बड दिना की छुट्टी मे मा ने थाडी सी भी चर्चा की होती। फ्लैट लेने के पीछे शेला का भी तो एक ही मकसद था - वह मा के निकट अधिक समय बिता सके। मा की बीमारी के फौरन बाद यह इरादा उस पर भूत की तरह सवार था पर पता नहीं क्या जैसे जैसे मा की तबियत सुधरती गई शेला का जोश भी ढीला पडता गया। कोई बात नहीं वह मा की इच्छा अब पूरी करेगी। अपने फ्लैट की बात बाद मे देखी जायेगी। उसके खुद के लिये ठिकाना तो है ही। वह पुन विश्व बेंक म अपने काम पर लोट जायेगी। कुछ नहीं तो इस मकान की देखभाल का एक बेमतलब बोझ तो कम होगा। वह आश्रम को पूरा मकान दान कर देगी। कोई पैसा नहीं लेगी। बदले मे रूथ को आजीवन ट्रस्टी बनाने और गुजारे के लिये मुनासिब भत्ता देने का प्रस्ताव रखेगी।

एसा हा हुआ भी। ट्रस्टी न शेला के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। कानूनी कार्यवाही वगरह पूरी करन म पूरा महीना निकल गया। अगल हफ्त शला यह घर हमशा क लिय छोड देगी। रूथ बहुत उदास है।

शेला उसका दर्द समझती है। उसने उसे ढाढस बधाया "अरे पगली। लन्दन तो मैं दफ्तर के ही काम से आती जाती रहूँगी, उस पर छुट्टिया भी तो है। कम से कम तुम्हारे यहाँ रहने से मेरे लिये आने जाने का एक बहाना भी तो रहेगा।"

आज शेला ओर रूथ दानो ही व्यस्त हैं। दोपहर बाद स ही इस घरौंदे को समेटने मे लगे हैं। पता नहीं आवश्यकताओ के नाम पर प्राणी क्या क्या इकट्ठा करता रहता है। शायद जरूरत से ज्यादा कूडा करकट जमा करना ही उसकी नियति है। क्या रखे, क्या छोडे इसी से परेशान है शेला। यह परेशानी तो बवाल ही बन गयी जब किताबो के छाँटने की बारी आई। कुछ तो छोडना ही होगा इतना बोझ नहीं ले जाया जा सकता है।

किताबो की उलट पलट म हाथ आ गया 'टॉम मौरिश का यात्रा सस्मरण' लेखक क विशेष अनुरोध पर सपादक द्वारा भजा गया प्रकाशन की पहली पुस्तक, जो उसके नाम भेट की गई थी। अतीत के झरोखे खुलने लगे – दिल्ली जयपुर और आमेर का वह किला। याद आई वह घाघरे वाली लडकी, जिससे चना खरीदा था और उसका पति वह सारगीवाला, नहीं – शेला को उसका नाम याद नहीं आ रहा। वह पास वाली कुर्सी पर बैठ उस किताब के पन्ने पलटने लगी। यह क्या ? ये पन्ने इतने कुरमुरे और गन्दे कैसे हुए ? उसने तो इसके अच्छे रखरखाव के लिए एक सुन्दर सा प्लास्टिक का स्पेशल कवर भी बनवाया था। वह कवर कहा गया ?

शेला को ख्याला म खाया दख रूथ उसके पास आ खडी हुई। कुछ क्षण वह असमजस मे रही – इस वाकिया का जिक्र छेड या नहीं। उसके मन ने कहा कहीं काइ फक नहीं पडगा अब इन बातो का सुन शेला परेशान नहीं होगी। उसने अपने पुराने गोल मोल से अन्दाज मे बातो का सिलसिला शुरु किया–

"यही सोच रही हा न कि इस किताब की ऐसी हालत कैसे हुई।"

"हा जब मैं मा को अपनी कामयाबी की खबर देने आई थी बात

से बात निकली थी और यह किताब उसका माध्यम बना था। फिर मा ने कहा था - अच्छा हम भी तो पढ तुम्हारे मित्र न क्या लिखा है भारत के बारे मे विशेषकर राजस्थान के बार म। जानती हा रूथ - मा वहाँ पैदा हुई थी पली बढी थी" रूथ अचम्भित शला की बात सुनती रही, उसे टोका नहीं। "मुझ तो पता था कि मा भारत की है पर उसके किस खास हिस्से स है यह मालूम नहीं था। उसी मुलाकात म मा ने यह सब बताया था।" शेला बोलती जा रही थी परन्तु उसके हाथ किताब के पन्ने पलट रह थे और आँख भी उसी की ओर लगी थी। उसने गौर किया जगह जगह पर कइ पन्ना म गहर निशान लगे हैं जरुर यह मा ने लगाय होंगे। उनकी आदत थी किताब म निशान लगाने की। वे सदा हरी स्याही इस्तेमाल करती थी। यहाँ भी हरी लकीरें ही लगी थी। कहीं-कहीं यह निशान बुरी तरह फैल कर पूरे पन्ने को ही गदा कर गया था। अपनी प्रिय पुस्तक की यह दशा देख शेला का मन उदास हो गया। उसने रूथ की ओर आँख उठाकर देखा। रूथ किन्हीं गम्भीर ख्याला म खाई थी।

"क्या हुआ ? क्या सोच रही हो ?" शेला ने टोका।

'कुछ नहीं' रूथ का छोटा सा उत्तर था। कुछ क्षण रुककर वह पुन बोली -"पिछले कई महीना से मैंने मिसेज मोना को सोने से पहले अक्सर इस किताब को पढत देखा था। तुम्ह तो पता है उन्ह टेबुल कुर्सी पर बैठकर ही पढने की आदत थी। बीमारी के बाद के चन्द महीना को छोडकर शायद ही मैंने उन्ह कभी बिस्तर मे लेटे लेटे पढते देखा हो।" शेला ने हामी भरी।

"उस समय मुझ कुछ कुछ ऐसा आभास हुआ था पर अब तो यकीन सा होने लगा है कि इस किताब को पढते पढते ही मिसेज डैनियल को दिल का दौरा पडा था।"

"तुम कहना क्या चाहती हो ? ' शेला की आवाज म भयमिश्रित आश्चर्य था।

संयोगवश उस रात तुम्हारी मा के सिवा इस घर मे कोई नहीं था। मुझे कुछ जरूरी काम से बाहर जाना पडा था। जाने से पहले मैंने रोजी को रात को ठहरा देने की बात कही थी। परन्तु मेडम ने हँस कर टाल दिया था। कहा था- " तुम निश्चिन्त होकर जाओ। पडोसी से कह दिया है उनका रसोइया रात का खाना बना देगा और सबेरे आठ बजे तक तुम आ ही जाओगी।" मैं सचमुच निश्चिन्त होकर चली गई थी। काश! मुझ जरा भी गुमान होता। बोलते-बोलते रूथ का गला भर आया और वह अपनी रुलाई न रोक सकी। शेला ने उसे ढाढस बधाया।

आगे की घटनाओ का शेला को पता था परन्तु आज के प्रसग मे सब कुछ बडा रहस्यमय लग रहा था। रोज की भाँति बडे तडके वह लडका अखबार डालकर मुडा ही था कि घर की पूरी बत्तिया जलते देख उसे ताज्जुब हुआ। साइकिल गेट पर लगाकर वह अन्दर आया। मुख्य दरवाजा भी खुला था। वह कुछ सशकित होने लगा। बाहर से ही कई बार आवाज लगाई। घटी भी बजायी पर कोई उत्तर न पा सहमते कदमो से भीतर घुसा। उसे पता था दाई ओर मिसेज डैनियल के सोने का कमरा है। उसने पर्दा उठाकर देखा पढने के टेबुल पर रखा लैम्प भी जल रहा था। उसके पास वाली कुर्सी फर्श पर उलटी हुई थी। पास ही मिसेज मोना जमीन पर आडी तिरछी पडी थी। फिर वही थोथी भाग-दोड जो हर अचानक मौत के पीछे होती है। डॉक्टरा की राय मे मिसेज मोना को पढते-पढते ही जबर्दस्त दिल का दौरा पडा था और वे कुर्सी पर ही ढेर हो गई थी।

यहा तक तो सब कुछ साफ ही था पर रूथ की बाकी बातो ने एक अजीब-सा जाल बुन दिया था। वह ठीक आठ बजते-बजते आ गई थी। बेवक्त की चहल-पहल देख उसका माथा ठनका था। मिसेज मोना के शव को ठीक से लिटाया जा चुका था। परिचितो को खबर दी जा रही थी। उसी उथल-पुथल मे रूथ ने टेबुल पर इस किताब को बेतरतीब-सा पडा देखा था। पूरी किताब गीली लग रही थी। प्लास्टिक वाला कवर अलग पडा था और ठीक उसी के बगल मे एक फोटोग्राफ भी उलटा पडा था।

बाकी का अनुमान सहज था। हमेशा की तरह मैडम पढने बैठी होगी। गरम दूध का गिलास टेबुल की बाईं ओर रखा होगा। भूल से हाथ लग जाने या चौंकने से गिलास गिरा होगा और उसका दूध छलक कर सीधे किताब पर फैला होगा। उन्होने जल्दी-जल्दी टेबुल और गिलास को पोछा होगा। हाँ गीला डस्टर भी नीचे रद्दी की टोकरी म पडा था। फिर देखा होगा दूध कवर के अन्दर भी घुस गया है। कवर उतारा होगा तभी उसके फ्लैप मे रखी वह तस्वीर बाहर आ गई होगी। एक बार फिर सब साफ-सूफ कर उत्सुकतावश उन्होने फोटो को ध्यान से देखने के लिये हाथ म लिया होगा कि हार्ट अटैक चाण्डाल बन कर उन पर टूट पडा होगा।

रूथ जैसे गहरी नींद से चौंकी बोली- "वह तस्वीर भी गीली थी। उसमे तुम्हारा चेहरा तो मेरा जाना पहचाना था पर बाकी के एक लडके और लडकी विचित्र वेश भूषा म थे। फोटो पर दाग न बैठ जाये इसलिये मैंने उसे अच्छी तरह पोछ कर किचेन म सुखाया था फिर उसे सीधा रखने के लिये रेसीपी बुक क अन्दर डाल वहा छोड दिया था। पता नहीं क्या मुझे लगा था वह तस्वीर कुछ खास माने रखती है। इसलिये इतने नाजुक मौके के बीच मैंने यह बेतुकी हरकत की थी। सोचा था जब तुम कुछ शान्त हो जाओगी तो चर्चा करूँगी। पर देखो तो पूरी की पूरी बात ही दिमाग से उतर गई। मैं अभी वह फोटोग्राफ लाती हूँ।" कुछ ही मिनट बाद वह किचेन से तस्वीर लिये लौटी और उसे शेला को थमा दिया।

शेला बडे गौर स उस तस्वीर को कई मिनटो तक घूरती रही। हा वही तो है। और याद हो आई टॉम के साथ होटल के लाँज मे बिताई गई वह शाम। कहा खो गया टॉम ? कहा खो गये सब ? आखिर सबक सब इस तरह क्या खो गये ? खाना तो उसे चाहिये था और वह है कि सब थपेडे झलती आज भी खाने पाने का हिसाब लिये बैठी है। हे ईश्वर! तुमने मर ऊचा करने को सब कुछ दिया पर अपना कधा तो छोडा होता जिस पर मैं सिर टिका सकता सोचते-सोचते शेला का हृदय बोझिल हो गया।

उसे घबराहट और बेचैनी सी होने लगी। हठात सब कुछ छोड-छाड वह बाहर निकल पडी।

बाहर टहल कर थाडा फ्रेश महसूस किया। जब रात गहराने लगी तो अन्दर लौटी। रूथ के साथ खाना खाया फिर गुडनाईट कह अपने कमरे मे सोने चली गई। परन्तु नींद कहाँ ? बार बार यही ख्याल आता रहा "अन्तिम समय मे मा के पास काई नहीं था।" रूथ की बातो से स्पष्ट था मा बिल्कुल भली चगी थी। शायद अपनी मौत का उन्हे खुद भी गुमान नहीं था फिर फिर ? प्रश्न फैलता गया। घबराहट और बेचैनी ने उसे फिर घेर लिया। पता नहीं क्या सोचकर वह टॉम की किताब और तस्वीर लिये मा के कमरे म चली गयी।

ठिठुरती रात आशकाओ से थर्राया मन, झुरझुरी देता साय साय सन्नाटा - शेला को लगा कोई उससे कुछ कहना चाह रहा है - कौन ? क्या ? उसने एक झटके से अपने का सम्भाला और मा का टेबुल पर बैठ उस किताब को ध्यान से पढना शुरु किया। पहले भी उसने इसे ध्यान से ही पढा था और थोडा पढते ही पूरा प्रसग उभर कर सामने आ जाता था। परन्तु कहा - उसे तो मा की मौत और इन सब के बीच कहीं कोई सूत्र नजर नहीं आ रहा। थककर उसने किताब पलट दी और कुर्सी के पीछे हथेलिया पर सिर टिकाये आँखे बन्द कर दिमाग को ढीला छोड दिया। कुछ देर बाद उसने फिर किताब पढना शुरु किया। वह काफी देर तक पढती रही। पर इस बार उसका ध्यान उन्हीं प्रसगों पर केन्द्रित था जहाँ मा ने स्याही से निशान लगाये थे। स्याही के फैलाव और दूध के धब्बा ने मिलजुलकर कहीं कहीं की छपाई बहुत धुधली कर दी थी। बडी कोशिशो के बाद शेला उन हिस्सो को पढ पा रही थी। अब उसे कुछ कुछ रोशनी दिखाई दे रही थी। उनमे एक साम्य था। ऐसे सभी चर्चित प्रसग घूम फिर कर कुछ गिन चुने स्थाना के थे और सब की पृष्ठभूमि मे कहीं न कहीं भवर सिह जरूर था।

भवर सिह जिसे टॉम ने अपनी पुस्तक मे एक न भूलने वाला पात्र

बना दिया है। गोरा चिट्टा तलवार कट मूछे भूरी आँखा वाला भवर सिह आज एक बार फिर शेला के सामने साकार हो गया। शेला ने किताब बद कर दी और अपन आटामैटिक कैमरे से खींचे उस तस्वीर को पुन गौर से देखने लगी। शोभा भी कितनी खूबसूरत दिख रही थी इस तस्वीर म। सही अर्थों म वह स्वय ही कुछ फीकी–सी पड रही है उन दोनो के सामने। अचानक शेला ने भवर सिह के पग्गड को अपनी उगलिया स ढक दिया। फिर बडे ध्यान से उसके नाक नक्श का मुआइना करने लगी। शायद ऐसे ही किसी तुलनात्मक अदाज ने टॉम के अन्दर के कलाकार को झकझोरा होगा और हठात् शेला को याद आई टॉम की कही वह बात – 'ह्वाट ए रिजेम्बलस' कितनी समानता है। तो क्या माँ

भवर सिह से मिलने के बाद चुहल–चुहल मे शेला ने भी तो पल भर के लिये सोचा था "मूछे लगा, साफा बाँध वह भवर सिह का डुप्लिकेट बन सकती है।" तो क्या मा भवर सिह वह । वह क्या सोच रही हे। क्या एक ही पेड की शाख या भी फैल सकती हैं ? या कि ये सिर्फ साय हैं। साये जो सच भी हें ओर नहीं भी।

हमारे प्रस्तावक की कल्पना यहीं चुक गई है। मगर आप अटकले लगाना चाहत हैं तो जरूर लगाय कि शेला भारत जायेगा भवर सिह को खोजने की चेष्टा भी करेगी। परन्तु क्या मिलेगा उसे सिवाय सूखी टहनियो के समेटने के और एक अर्थहीन सतोष के।

✣





और अत मे

अनत के आकार को अपने मे समेटने वाला रचयिता तो शेला के लिय कुछ ओर ही रच रहा है। शला आज नौकरी पर वापस जा रही है। सामान पहल ही जा चुका ह। घटे भर बाद उसकी टैक्सी आ जायगी। वह सभी कमरा म बारी-बारी से घूम आई है। वह बार-बार घडी देख रही है। चाहती है जल्दी से जल्दी टैक्सी आये ओर वह यहाँ का मोह तोड भाग।

तभी दरवाजे की घटी बजी। पोस्ट मैन था। मिसेज डेनियल के नाम एक रजिस्टर्ड चिट्ठी थी। शेला ने दस्तखत कर ले लिया। सावधानी से लिफाफा खोल पत्र निकाल पढने लगी।

4 जून 1970

डियर मैडम मैं नहीं जानता किन शब्दो मे आपका शुक्रिया अदा करु। वर्षों बाद कल मैंने आजादी की सास ली है और आज यहाँ पहुचा हूँ। यहीं आकर पता चला कि आपने इग्लेण्ड के चर्च और वहा की अमेरिकी एम्बेसी की नाक मे दमकर उन्हे पता लगाने पर मजबूर किया था।

उन दिना मैं भारतीय महाद्वीप के पहाडो की यात्रा पर था। भूटान-नेपाल होता हुआ भारत की सीमा से मानसरोवर और केलाश की ओर निकल पडा। फिर भटक कर चीन के जिनिजियाग इलाके म निकल गया। यह सन् 1962 की बात है। दुर्भाग्य से तभी भारत और चीन के बीच लडाई छिड़ गई। कुछ हिन्दुस्तानी सिपाहियो क साथ मुझे भी पकड लिया गया। मुझ भारत का जासूस समझा जाने लगा। मरा सामान पास्पोर्ट आदि पहले ही खा चुका था। मेरी जिरह होती रही पर बात कुछ हो ता

निकले। मैं तो समय का मारा था। मुझे एक जेल से दूसरे जेल घुमाया जाता रहा। चूँकि न मेरी खोज खबर लेने वाला कोई था न मेर जान-पहचान वाला के पास कोई सुराग, पिछले आठ वर्षो से एक अनजान देश मे गुमनामी की जिदगी जीने पर मजबूर रहा। कोई साल भर हुये कुछ उम्मीद बधी जब ब्रिटेन सरकार ने खोज खबर लेनी शुरु की। आज पता चला माध्यम तो आप थीं।

कहने को बहुत कुछ है पर पत्र बहुत लम्बा हो रहा है, मिलकर बाते होगी। कुछ औपचारिकताये पूरी करके मैं 7 जून की शाम को आपसे मिलने आ रहा हूँ।

मिलने की विशेष आस लिये,

आपका चिरअनुगृहीत

टॉम मौरिश

पत्र पढकर शेला के दिल की धडकन तेज हो गई। यह कौन आ रहा है ? टॉम या मा का आशीर्वाद ?

卐

तारिणी सिन्हा एक सवेदनशील रचनाकार और सहृदय इन्सान है। पेशे से बेकर, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के उपमहाप्रबन्धक रहे, सिन्हा जीवन के गुणा-भाग मे उलझते-सुलझते साहित्य के अध्ययन में निरन्तर मग्न रहे हैं। लिखना बाद मे शुरु किया। लिखने के लिए विपय की कोई सीमा नहीं, बाध्यता नहीं। एक दिन के घटनाक्रम से लेकर जिजीविषा और मृत्यु-भय जेसे मनोवैज्ञानिक सत्य इनके विपय विस्तार मे आते हैं। इनकी अब तक प्रकाशित कृतिया हे- बैकरनामा, हलफनामा ओर उखडे दरख्त। बैकरनामा मे सिन्हा के बेंकर रूप मे बिताए कार्यकाल के अनुभवो का लेखा-जोखा हे और हलफनामा उपन्यास साहित्यिक गरिमा लिए हुए एक रहस्य कथा है।

यह उपन्यास 'उखडे दरख्त' की किचित परिवर्तनो के साथ पुनर्प्रस्तुति हे।

सपर्क

जया निवास, बी-245, वैशाली नगर, जयपुर (राजस्थान)

दूरभाष 0141-355081

आवरण सजीव कुमार